# बच्चों के गीत

पन्नालाल चौरासिया

# बच्चों के गीत

(भातखंडे स्वरलिपि सहित)

## नर्सरी, प्रायमरी; मिडिल कक्षाओं के लिये

सहगान, गीत, लोकगीत, मारचिंगगीत, राष्ट्रीय गाने,
स्काउटगान, परम्परागत प्रार्थनाये, व राष्ट्रगान

## संगीत शास्त्र, गायन-वादन

## कक्षा ६,७,८ के लिये दिल्ली, शिक्षा पाठ्यक्रम के अनुसार

लेखक

**पन्ना लाल चौरासिया**

बी० म्यूज (गायन), बी० टी० म्यूज (संगीत-
शिक्षण), एम० म्यूज (वादन वायलिन)।

(भूतपूर्व प्राध्यापक, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, सदस्य संगीत व नृत्य,
देहली शिक्षा पाठ्यक्रम विभाग, संगीताध्यापक, राजकीय मॉडल स्कूल, लुडलो
कॉसल, अलीपुर रोड, देहली ६)



प्रथम आवृत्ति १९६३] [मूल्य १:००

प्रकाशक

**सरस्वती प्रकाशन**

६५५, कटरा नील, घन्टेश्वर गली

दिल्ली—६



★



★

मुद्रक

**नवयुग प्रेस**

( संगीत मुद्रण विशेषज्ञ )

२४०, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

# लेखक के दो शब्द

मुझे राजकीय उच्च माध्यमिक माडल स्कूल, लुडलो कॉसिल अलीपुर रोड, देहली–६, में ६ अगस्त १९६० से प्रायमरी व मिडिल कक्षाओं में विद्यार्थियों को सङ्गीत शिक्षा देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे सामने बच्चों के बालोपयोगी गीत, जो सुमधुर धुनों में बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से शिक्षाप्रद, भावपूर्ण एवं पथ-प्रदर्शक हों के न होने की बड़ी समस्या थी। ऐसे गीतों का बड़ा अभाव था। मैं कवि नहीं हूँ। मेरे हृदय से ऐसी प्रेरणा मिली कि ऐसे गीतों को बनाऊँ जिनसे बाल जगत में उनके जीवन विकास क्रम में सहायता मिले। मैं इस काम में जुट गया और भगवान की कृपा से रचनायें अच्छे धुनों के साथ बनी और हमारे बच्चों ने बड़े उल्लास व उत्साह के साथ उसको अपनाया और उनको इस समूह गान में एक अद्भुत आनन्द मिलने लगा।

मेरी इच्छा है कि इन रचनाओं से ज्यादा से ज्यादा बच्चे लाभ उठावें जिससे हमारे राष्ट्र के बच्चे अच्छी दिशा में अग्रसर होकर राष्ट्र की सेवा कर सकें।

इस पुस्तक को लिखने में श्री आचार्य उमाशंकर शास्त्री (जानकार) व जिन गुरुजनों का आशीर्वाद मिला है उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। श्री प्रकाश नारायण एम० ए०, सङ्गीत प्रभाकर (कला प्रकाशन) का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का आकर्षक मुद्रण किया है।

लेखक

# पुस्तक पर कुछ विचार

हमारे देश में बच्चों के लिये गेय पद अभी प्रचुर मात्रा में नहीं बने हैं। संगीत के संस्कार जितनी छोटी अवस्था में डाल दिये जायें उतना ही अच्छा है। अतः ऐसी पदावलियों की बड़ी आवश्यकता है जिन्हें बालक बालिकायें चलते फिरते खेलते और बैठते स्वाभाविक उमंग और उत्साह से गा सकें। ये पद सरल हों, देश भक्ति और कर्तव्य पालन के स्वस्थ संस्कारों से युक्त हों तथा बालोचित उत्साह और उमंग के अनुरूप हों। मैं समझता हूँ कि श्री पन्ना लाल चौरासिया (संगीत प्रवीण, संगीत शिक्षा निपुण, संगीताध्यापक राजकीय उच्च माध्यमिक माडल स्कूल, लुडलो कैशल, दिल्ली ६) ने इस दिशा में अत्यन्त स्तुत्य प्रयत्न किया है। मैं इस प्रयत्न को सराहना और बधाई के योग्य समझता हूँ।

चन्द्र शेषर पंथ एम० ए०
साहित्याचार्य, संगीत विशारद
प्राध्यापक संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

❀

बाल शिक्षा में संगीत का, विशेष कर सहगान का कितना महत्वपूर्ण स्थान है यह किसी से छिपा नहीं है। बालकों में एकता पारस्परिक सहयोग, परिश्रम-शीलता आदि अनेक गुणों के विकास में इसके द्वारा विशेष रूप से सहायता मिल सकती है। किन्तु बालकों के मानसिक विकास को दृष्टि में रखकर इस दिशा में विशेष प्रयास अभी तक नहीं किया गया है। संगीत और कविता की कड़ाई से भी जो गीत ऊँचे दर्जे के होते हैं, वे भी कई बार बालकों के लिये उपयोगी सिद्ध नहीं होते। बाल संगीत में प्रसाद गुण सर्वोपरि रहना अपरिहार्य है। इन गीतों की कविताओं की धुन, लय और ताल ऐसे हों जो आसानी से समझ में आ

जायें और सीखे जा सकें। साथ ही आकर्षक हों और जवान पर चढ़ जायें। इसी दृष्टि कोंण से पन्नालाल चौरासिया ने यह छोटी सी पुस्तिका लिखी है। पुस्तक को सर्वथा निर्दोष तथा सर्वांग-पूर्ण होने का दावा तो वे स्वयं भी करना चाहेंगे किन्तु इतना तो अवश्य है कि यह योग्य दिशा में उठाया गया सही कदम अवश्य है। आशा है कि रसिकों द्वारा इसका उचित स्वागत होगा।

विनय चन्द्र मोदगल्य
संगीताचार्य
प्रिन्सिपल, गांधर्व महाविद्यालय, दिल्ली
(वसंत पन्चमी)

❀

'बच्चों के गीत' शीर्षक संगीत की पुस्तक में लेखक ने सरल एवं सुबोध भाषा में स्वरचित गेय पदों की स्वर-रचना की है जो प्रारम्भिक अल्प वयस्क संगीत शिक्षार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। प्रस्तुत ग्रन्थ में भावात्मक संगीत की प्रधानता है। प्रार्थना, भजन, तथा राष्ट्रीय गीतों में बाल-सुलभ व्यावहारिक जीवन की नैसर्गिक अभिव्यन्जना तथा आकर्षक स्वर रचना अत्यन्त स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की समीचीनता पर दृष्टि पात करते हुये मुझे आशा और विश्वास है कि प्रारम्भिक कक्षा के संगीत छात्रों के लिए यह पुस्तक उपयुक्त सिद्ध होगी।

जगदीश नारायण पाठक
संगीत प्रवीण, रजिष्ट्रार
प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद

❀

श्री पन्ना लाल कृत बच्चों के गीत देखकर प्रसन्नता हुई। हिन्दी में बाल गीतों का विशेष अभाव रहा है, अतः इस दिशा में प्रयास सदा सराहनीय कहा जायेगा। बाल-जीवन के उपयुक्त गीत बना कर उन्हें तदनुकूल स्वर-लय में बांध कर पन्ना लाल जी ने स्तुत्य कार्य किया है। मेरी अभिलाषा कि इस कार्य को सभी सहृदय व्यक्ति उचित प्रोत्साहन दें।



महेश नारायण सक्सेना
एम० ए०, बी० एस सी०, संगीत प्रवीण
नेतर हाट विद्यालय (बिहार)

❀

श्री पन्ना लाल द्वारा रचित छोटे बच्चों के गीतों का तथा उनकी धुनों का संकलन देखा। इन गीतों तथा इनके धुनों की रचना बाल-सुलभ प्रकृति के अनुरूप हुई है। बच्चे इन्हे पसन्द करेंगे एवं सरलता से सीख कर गा सकेंगे। इन गीतों की रचना लेखक ने निजी अनुभवों के आधार पर की है और इस प्रकार जो किया जाता है वह निश्चय ही उपयोगी एवं प्रशंसनीय होता है।

मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक बच्चों में संगीत के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के साथ साथ उनकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के समुचित विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

पं० लाल मणि मिश्रा
एम० ए०, साहित्य रत्न, डाक्टर आफ वीणा
एम० म्यूज (वोकल), बी म्यूज (सितार, तबला)
सेक्रेटरी, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय, बम्बई
रीडर
कालेज आफ म्युजिक एन्ड फाइन आर्ट
बी० एच० यू०

बालक बालिकाओं के शिक्षण क्रम में सङ्गीत की उपादेयता कितनी अधिक है यह किसी भी शिक्षाविद् एवं शिक्षा प्रेमी से तिरोहित नहीं है। किन्तु जहाँ तक विद्यालयों में इसकी शिक्षण पद्धति का प्रश्न है उसमें बाल मनोविज्ञान का ध्यान नहीं रखा जाता। प्रारम्भ में ही शिक्षणार्थी को स्वर-ज्ञान सम्बन्धी शुष्क नियम तथा शास्त्रीय राग की धुनें आदि कंठस्थ कराने का नियम उपक्रम होने लगता है जिससे आधुनिक शिक्षणार्थी इससे उद्विग्न हो जाता है। इस कमी को दूर करने की दिशा में "बच्चों के गीत" एक सफल प्रयत्न है। इसके रचयिता श्री पन्नालाल चौरासिया ने सरल और रोचक धुनों में बालोपयोगी गीतों की रचना की है। अभ्यास में सुविधा की दृष्टि से गीत लिपि भी दे दी गई है। हमारे बाल छात्रों ने इन रचनाओं को बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ अपनाया है।

मैं आशा करता हूँ कि इस रचना को प्रचुर प्रोत्साहन मिलेगा।

कृष्ण कुमार पुन्ज
प्रिन्सिपल
राजकीय उच्च माध्यमिक मॉडल स्कूल
लुडलो कॉसिल, अलीपुर रोड, देहली

# अनुक्रमणिका

## प्रथम अध्याय

### सहगान



### प्रार्थना, स्काउट गीत तथा राष्ट्र गान

## दूसरा अध्याय



——

सब पर्वत स्याही करूँ, घोलू समुन्दर जाय।
धरती को कागद करूँ, गुरू स्तुति न समाय॥

पूज्य गुरू

श्री उमाशङ्कर श्रीवास्तवा ( श्री रज्जन बाबू )

के

चरणों में

सादर समर्पित

—पन्ना लाल चौरासिया

# भातखन्डे स्वर लिपि पद्धति

| | |
|---|---|
| शुद्ध स्वर | स रे ग म ( कोई चिन्ह नहीं ) |
| कोमल स्वर | रे॒ ग॒ ध॒ नी॒ |
| तीव्र स्वर | म॑ |
| मन्द्र सप्तक के स्वर | नी़ ध़ प़ म़ |
| मध्य ,, ,, | स रे ग म ( कोई चिन्ह नहीं ) |
| तार ,, | सं रें गं मं |
| एक मात्रा | स रे ग म (कोई चिन्ह नहीं) |
| दो मात्रा | स - रे - |
| तीन मात्रा | स - - रे - - |
| आधी मात्रा | सारे‿ गम‿ पध‿ नीसं‿ |
| तिहाई मात्रा | सरेग‿ मपध‿ नीसंरें‿ |
| सम | × |
| खाली | o |
| ताली | ताली की संख्या |
| उच्चारण | रा ऽ म |
| मीड़ | ग͡प |
| कण स्वर | $^{\text{ग}}$प या प$^{\text{ग}}$ |

(१)

## स्कूल पढ़ने जायेंगे

हम जायेंगे, हम जायेंगे, स्कूल पढ़ने जायेंगे।
घंटी बजी चलो प्रार्थना में, प्रार्थना करके कक्षा में ॥

पहला घंटा इंगलिश का, ए बी सी डी एक्स वाई जेड।
दूजे घंटे में करो सवाल, दो दुनि चार और चार दुनि आठ ॥

तीजे घंटे में पढ़ ली हिन्दी, चांद के ऊपर लगेगी बिन्दी।
चौथे घंटे में भूगोल, देखो सारी दुनिया गोल ॥

पांचवी में आया विज्ञान, राकेट से हम पहुंचे चांद।
चाँद पै हो गइ आधी छुट्टी, खाओ फल और मक्खन रोटी ॥
हम जायेंगे हम जायेंगे, हम चांद की सैर को जायेंगे ॥

छठवां घंटा गाने का, प ग म प ग म प ध नी प।
सातवें में आया अब बैन्ड, ढम ढम ढम ढम पम पम पम ॥
हम जायेंगे हम जायेंगे, हम ढम पम करने जायेंगे ॥

आठवीं में खेलो फुटबाल, क्रिकेट हाकी बाली बाल।
नववां घंटा ट न न न न न, बन्द किताबें चल दो घर ॥
हम जायेंगे हम जायेंगे, स्कूल से घर को जायेंगे ॥

## (कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

### स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | — | —सा | | सा |
| | | | | | | | | | | | | ऽ | ऽ | ह | म |
| सा | रे | रे | ग | ग | — | सा | सा | सा | रे | रे | ग | ग | — | ग | म |
| जा | ऽ | ये | ऽ | गे | ऽ | ह | म | जा | ऽ | ये | ऽ | गे | ऽ | इ | स |
| प | — | रे | ग | म | म | सा | रे | ग | — | रे | ग | सा | — | — | — |
| कू | ऽ | ऽ | ल | प | ढ़ | ने | ऽ | जा | ऽ | ये | ऽऽ | गे | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| प | — | ग | म | प | — | ग | म | प | ध | सां | नीध | प | — | — | — |
| घ | ऽ | न्टि | ब | जी | ऽ | च | लो | प्रा | ऽ | र्थं | नाऽ | में | ऽ | | ऽ |
| म | ग | रे | ग | म | ग | रे | ग | प | — | ग | रे | सा | — | सा | सा |
| प्रा | ऽ | थ | ना | क | र | के | ऽ | क | ऽ | क्षा | ऽ | में | ऽ | ह | म |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

### (१) अन्तरा

पहला घंटा इंगलिश का = स्थाई की = घंटी बजी की तर्ज पर
ए बी सी डी एक्स वाई जेड = स्थाई की = प्रार्थना करके की तर्ज पर
दूजे घंटे में करो सवाल, दो दुनि चार औ चार दुनि आठ = ऊपर के दोनों लाइनों के तर्जों पर

### (२) अन्तरा

| | |
|---|---|
| तीजे घंटे में पढ़ली हिन्दी, चांद के ऊपर लगेगी विन्दी | घंटी बजी चलो प्रार्थना के तर्ज पर होगी |
| चौथे घंटे में भूगोल देखो सारी दुनिया गोल | यह दोनों लाइने प्रार्थना करके कक्षा में की तर्ज पर होगी |

इसी तरह सब अन्तरे अन्तरा (२) की तरह गाये जायेंगे ॥

## झूला झूले जी भर के

हम तुम तुम हम, हम तुम तुम हम ।
हम तुम चलें झूला बाग, झूला झूलें जी भर के ॥
पेंग बढ़ायें, नाचे गाय, जी भर अपना जी बहलायें ।
खेले कूदें शोर मचायें, हम तुम तुम हम ॥
वह देखो अब चकरी घूमी ।
सारी दुनिया घूम रही है ॥
घूम घूम कर शोर मचा है ।
सबकी ऊँची पेंग बढ़ी है ॥ हम तुम तुम हम ॥
अब बग्गी की करो सवारी ।
घूम के रख दो दिल्ली सारी ॥
अब देखो स्कूल आ गया ।
पहुंचो जल्दी देर करो मत ॥

### ( कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय )

स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प़ | प़ | सा | सा | रे | रे | सा | सा | प़ | प़ | सा | सा | रे | रे | सा | सा |
| ह | म | तु | म | तु | म | ह | म | ह | म | तु | म | तु | म | ह | म |
| प़ | प़ | सा | सा | रे | रे | सा | सा | सा | — | रे | — | ग | — | — | — |
| ह | म | तु | म | च | ऽ | ले | ऽ | झू | ऽ | ला | ऽ | बा | ऽ | ऽ | ग |
| प | — | म | — | ग | — | सा | रे | ग | म | रे | ग | सा | — | — | — |
| झू | ऽ | ला | ऽ | झू | ऽ | ले | ऽ | जी | ऽ | भ | र | के | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | प | प | प | ध | प | म | – | सा | म | म | म | प | म | ग | – |
| पें | ऽ | ग | ब | ढ़ा | ऽ | यें | ऽ | ना | ऽ | चें | ऽ | गा | ऽ | यें | ऽ |
| ग | प | प | ध | नी | ध | प | – | ग | प | प | ध | नी | ध | प | – |
| जी | ऽ | भ | र | अ | प | ना | ऽ | जी | ऽ | ब | ह | ला | ऽ | यें | ऽ |
| प | ध | ध | म | प | प | म | ग | ग | म | ग | सा | रे | रे | सा | – |
| खे | ऽ | ले | ऽ | कू | ऽ | दें | ऽ | शो | ऽ | र | म | चा | ऽ | यें | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

आगे के अन्तरे

वह देखो अब चकरी घूमी = पेंग बढ़ायें की तर्ज पर
सारी दुनिया घूम रही है = इसी तर्ज पर
घूम घूम कर शोर मचा है = जी भर अपना की तर्ज पर
सबसे ऊँची पेंग बढ़ी है = खेले कूदें शोर की तर्ज पर
अगला अन्तरा इसी अन्तरे की तर्ज पर गाया जायेगा।

---

(३)

## यह हिन्दुस्तान हमारा है

यह हिन्दुस्तान हमारा है, हमारा
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, आपस में हैं भाई भाई।
न झगड़ा न कोई लड़ाई, सबकी आखों का तारा है ॥ (यह)
हम वीर भूमि की सन्ताने हैं, शेरों के सरदार बने हैं।
सत्य अहिंसा के बल से, पंच शील का पाठ पढ़ाना है ॥ (यह)
रामकृष्ण, गौतम औ गान्धी, अर्जुन, भीम, प्रताप, शिवाजी।
बड़े बड़े बलवानों के बल, हम बच्चों की थाती है॥
उन्हीं शूर वीरों के पथ पर, बढ़ना काम हमारा है ॥ (यह)
पंच शील का पाठ पढ़ा करके हम, सबको हम अपनायेंगे।
हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गङ्गा बहती है ॥ (यह)

## ( कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय )

### स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | — | — | सा | सा |
| | | | | | | | | | | | | ऽ | ऽ | य | ह |
| सा | रे | रे | म | म | ग | रे | सा | सा | रे | रे | म | म | ग | रे | सा |
| हि | ऽ | न्दु | स | ता | ऽ | न | ह | मा | ऽ | रा | ऽ | है | ऽ | ऽ | ह |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| रे | - | सा | — | — | — | | | | | | | | | | |
| मा | ऽ | रा | ऽ | ऽ | ऽ | | | | | | | | | | |

### अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | — | ध | ध | ध | ध | ध | ध | ध | नी | ध | नी | नी | ध | प | प |
| हि | ऽ | न्दू | ऽ | मु | स | लि | म | सि | ऽ | ख | इ | सा | ऽ | ई | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| प | | प | म | ग | रे | रे | ग | म | प | प | प | प | — | प | — |
| आ | ऽ | प | स | में | ऽ | स | ब | भा | ऽ | ई | ऽ | भा | ऽ | इ | ऽ |
| प | — | ध | ध | नी | - | सां | — | ध | सां | नी | ध | प | — | प | — |
| न | ऽ | झ | ग | ड़ा | ऽ | न | ऽ | को | ऽ | ई | ल | ड़ा | ऽ | ई | ऽ |
| प | ध | ध | प | म | ग | रे | सा | सा | रे | रे | म | म | ग | रे | सा |
| स | ब | के | ऽ | आँ | ऽ | ख | का | ता | ऽ | रा | ऽ | है | ऽ | ऽ | ह |
| रे | — | सा | — | — | — | | | | | | | | | | |
| मा | ऽ | रा | ऽ | ऽ | ऽ | | | | | | | | | | |

आगे के अन्तरे इसी की तर्जों पर गाये जायेंगे

रामकृष्ण गौतम औ गान्धी
बड़े बड़े बलवानों के बल

दोनों पूरी लाइनें अन्तरे की पहली लाइन के तर्जों पर गाई जायेगी।

———

## (४)

## हम भारत के बच्चे हैं

हम भारत के बच्चे हैं, भारतवर्ष हमारा है।
सत्य अहिंसा विश्व प्रेम की, हम बच्चों का नारा है ॥
हम वीर बने बलवान बने, हम माँ की सच्ची शान बने।
पंच शील का पाठ पढ़ा, सारे जग का कल्याण करें ॥
राष्ट्र देश के आदर हित हो, तन मन धन सब सारा ॥। (हम०)
हम हिन्दू हैं, हम मुस्लिम हैं, हम सिख पासी ईसाई हैं।
जात पांत का भेद नही, हरिजन अपने ही भाई हैं ॥
सबको साथ यहां रहना है, कोई नहीं पराया ॥।

### (कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

### स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | + | + | सा | प॒ |
| | | | | | | | | | | | | ऽ | ऽ | ह | म |
| सा | – | सा | प॒ | सा | – | सा | – | रे | – | ग | – | – | + | – | – |
| भा | ऽ | र | त | के | ऽ | ब | ऽ | च्चे | ऽ | हैं | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| प | – | म | ग | म | ग | रे | सा | रे | – | ग | – | – | – | – | – |
| भा | ऽ | र | त | व | ऽ | र्ष | ह | मा | ऽ | रा | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प – म ग | म ग रे सा | रे ग – ग | – – – – |
| स ऽ त्य अ | हिं ऽ न्सा ऽ | वि ऽ श्व प्रे | ऽ म की ऽ |
| प प म ग | म ग रे सा | रे – सा – | – –(स्थाई |
| ह म ब ऽ | च्चों ऽ का ऽ | ना ऽ रा ऽ | ऽ ऽ |
| × | ० | × | ० |

अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | – – ग म |
| | | | ऽ ऽ ह म |
| प – प म | ग – ग म | प – प म | ग – ग म |
| वी ऽ र ब | ने ऽ ब ल | वा ऽ न ब | ने ऽ ह म |
| प – ध – | नी – सां – | नी ध प ध | प – – – |
| माँ ऽ की ऽ | स ऽ च्ची ऽ | शा ऽ न ब | ने ऽ ऽ ऽ |
| × | ० | × | ० |

पंच शील का पाठ पढ़ा सारे जग का कल्याण करें, ऊपर की तर्ज पर

| | | | |
|---|---|---|---|
| सां – सां सां | – सां प – | प – ध ध | प प म – |
| रा ऽ ष्ट्र दे | ऽ श के ऽ | आ ऽ द र | हि त हो ऽ |
| प – ध – | प – म – | प – ध – | – –(स्थाई) |
| त न म न | ध न स ब | सा ऽ रा ऽ | ऽ ऽ |
| × | ० | × | ० |

अगला अन्तरा इसी अन्तरे की तर्ज पर गाया जायगा।

---

## चल कबड्डी आल ताल

चल कबड्डी आल ताल, मेरी मूछें लाल लाल
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४
आओ गांधी आओ लाल, जुग जुग जियो जवाहर लाल (चल)
चुन्नू मुन्नू तुम भी आओ, देश जाति पर बलि बलि जाओ
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ (चल)
एक साथ सब ताल बजाओ, खेल कूद में करो कमाल
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ (चल)
पाठ पढ़ो औ करो सवाल, हम सब हैं भारत के लाल
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ (चल)

### (कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सस | सा | म | म | प | प | म | – | सा | सा | म | म | प | प | म | म |
| चल | क | ब | ड्डी | आ | ऽ | ता | ल | मे | री | मू | छें | ला | ल | ला | ल |
| सां | – | ध | – | प | – | म | – | सां | – | ध | – | प | – | म | – |
| १ | ऽ | २ | ऽ | ३ | ऽ | ४ | ऽ | १ | ऽ | २ | ऽ | ३ | ऽ | ४ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

आओ गांधी आओ लाल, जुग जुग जियो जवाहर लाल
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४

ऊपर के तर्ज पर

अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| ध सां ध सां | धध गं रें सां | ध- संध -ध संसं | धध गंगं रें सं |
| चु न्न् मु न्नू | तुम भी आ ओ | देऽ शजा ऽति पर | बलि बलि जा ओ |
| × | ० | × | ० |
| १ २ | ३ ४ | १ २ | ३ ४ |

स्थाई की तर्ज पर सारे अन्तरे इसी अन्तरे की तरह गाये जायेंगे।

---

(६)

## मांझी

हैया रे हैया, हैया रे हैया।
पार लगादे नैया, पार लगादे नैया॥
पार लगादो हैया रे हैया॥।

तक धिना धिन, तक धिना धिन, तक धिना धिन हैया।
ता थेई थेई, ता थेई थेई, ता थेई ता थेई थैया॥
ल ल ल ल ल ल ला ऽ ल ला ऽ ऽ॥।

चन्दा की छांव में जाल धरे नाव में।
हे हे हे मांझी हे हे हे मांझी। (हैया रे हैया)

ल ल ल ल ला, ल ल ल ल।
चाहे तूफान हो, राहें अनजान हो॥
पहुचे सागर पार मांझी, सा ध ध प म॥। (हैया रे हैया)

## (कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

### स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा म — म | प म — म | सा म — म | प म — म |
| है या ऽ रे | है ऽ या ऽ | है या ऽ रे | है ऽ या ऽ |
| | | | २ बार |
| सस साम म | प — म म | सस साम म | प — प — |
| पार ल गा दे | नै ऽ या ऽ | पार ल गा दे | नै ऽ या ऽ |
| | | | २ बार |
| सां ध — सां | ध प म — | सां ध सां — | ध प म — |
| पा ऽ र ल | गा ऽ दे ऽ | पा ऽ र ल | गा ऽ दे ऽ |
| × | ० | × | ० |
| | | | २ बार |

हैया रे हैया, हैया रे हैया
ऊपर की तर्ज पर २ बार

### अन्तरा (१)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प सां प सां | प सां प सां | प सां प सां | गं — रें सां |
| तक धी ना धिन | तक धी ना धिन | तक धी ना धिन | है ऽ या ऽ |
| प सां प सां | प सां प सां | प सां प सां | गं — रें सां |
| ता थे ई थेई | ता थे ई थेई | ता थे ई थेई | थै ऽ या ऽ |
| × | ० | × | ० |

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध | ध | ध | प | ध | प | म | – | ध | ध | ध | प | ध | प | म | म | |
| च | न्दा | ऽ | की | छां | व | में | ऽ | जा | ल | ध | रे | ना | ऽ | व | में | २ बार |
| म | – | ध | – | नी | – | रें | – | सां | – | – | – | ध | प | म | – | |
| हे | ऽ | हे | ऽ | हे | ऽ | मा | ऽ | झी | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | | दो बार |

हैया रे हैया, स्थाई गाइये

## अन्तरा (२)

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | – | ग | – | प | – | ध | – | प | – | – | ध | प | ग | सा | – | |
| ल | ऽ | ल | ऽ | ल | ऽ | ल | ऽ | ला | ऽ | ऽ | ल | ल | ल | ल | ऽ | २ बार |
| सा | ग | – | प | ध | ध | प | – | सा | ग | – | प | ध | ध | प | – | |
| चा | हे | ऽ | तु | फा | न | हो | ऽ | रा | हे | ऽ | अन | जा | न | हो | ऽ | |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | | २ बार |
| प | ध | सां | रें | गं | रें | सां | ध | सां | – | – | ध | गं | रें | सां | – | |
| प | हु | चे | ऽ | सा | ऽ | ग | र | पा | ऽ | ऽ | र | मा | ऽ | झी | ऽ | |
| सां | – | ध | – | – | ध | – | प | म | – | – | सा | ध | प | म | – | |
| हे | ऽ | हे | ऽ | ऽ | हे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ल | ल | ल | ला | ऽ | |

---

# लोक गीत

## घेरि घेरि आई सावन की बदरिया ना

घेरि घेरि आई , सावन की बदरिया ना ।
आई सावन की बहार, मुरला करत पुकार ॥
पड़ै बूदन फुहार, भवनवां ना (घेरि घेरि आई) ध
बोले दादुर बनमोर, सुनके पपिहा का शोर ।
मोहे याद आवे, निशदिन सवनवा ना ॥ (घेरि घेरि आई)
जब से गए बनवारी, सुधि लीन्ही ना हमारी ।
झूला कैसे झूलू , गाये बिन कजरिया ना ॥ (घेरि घेरि)

### (दादरा, मात्रा ६, मध्यलय)

स्थाई

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | ध | प | ध |
| | | | | | | | | | घे | ऽ | रि |
| म | - | म | प | ध | - | ध | नी | ध | प | म | म |
| | ऽ | रि | आ | ई | ऽ | सा | व | न | की | ऽ | ब |
| प | ध | - | म | - | म | म | - | - | ध | - | नी |
| द | री | ऽ | या | ऽ | ऽ | ना | ऽ | ऽ | हां | ऽ | ब |
| सां | - | रें | गं | - | रें | सां | - | - | | | |
| द | ऽ | री | या | ऽ | ऽ | ना | ऽ | ऽ | | | |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |

(२ बार (हाँ बदरिया ना, हाँ बदरिया ना, गाया जायगा )

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | म | म | प |
| | | | | | | | | | आ | ऽ | ई |
| ध | – | ध | नी | – | प | ध | – | – | म | म | प |
| सा | व | न | की | ऽ | व | हा | ऽ | ऽ | मु | र | ला |
| ध | – | ध | नी | – | प | ध | – | – | | | |
| क | र | ऽ | त | ऽ | पु | का | ऽ | ऽ | | | |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |

पड़े बूदन फुहार भवनवा ना—स्थाई की पहली लाइन की तर्ज पर गाई जायगी। इसी तरह सारे अन्तरे गाये जायँगे।

---

( ८ )

## मदारी (हास्यगीत)

### डुम्मक डुम

डम डम डुम्मक डुम्म, डमरू बोला डुम्मक डुम्म।
देखो लड़को आया मदारी, जादू की एक लिए पिटारी ॥
आये हैं हम खेल दिखाने, नहीं मांगते एक दो आने ॥। (स्थाई)

फारस से बन्दर एक आया, चार मील की दुम फैलाया।
लन्दन से आई एक बिल्ली, नौ मन खाती दूध मलाई ॥ (स्थाई)

यह देखो जापान की गुड़िया, मुँह ऐसा ज्यों पीली खड़िया।
बौना आया बनारस का, खाता पान महोबे का ॥ (स्थाई)

अब देखो यह रूस का राकेट, पकड़ के रखता अपने पाकेट।
देखो लकड़ी वाला बाबा, भारत को आजाद कराया ॥
देखो चाचा नेहरू आये, पन्चशील का पाठ पढ़ाये ॥। (स्थाई)

## ( कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय )

### स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| ध॒ – म – | रे॒ रे॒ सा – | ध॒ – म – | रे॒ रे॒ सा – |
| डम ऽ डम ऽ | डु म्मक डुम ऽ | डम ऽ डम ऽ | डु म्मक डुम ऽ |
| | | | ४ बार |
| सां सां नी॒ ध | नी॒ नी॒ ध प | नी॒ नी॒ ध प | म – – – |
| दे ऽ खो ऽ | ल ड़ कों ऽ | आ ऽ या म | दा ऽ री ऽ |
| सां सां नी॒ ध | नी॒ नी॒ ध प | नी॒ नी॒ ध प | म – – – |
| जा ऽ दू ऽ | की ऽ ए क | लि ये ऽ पि | टा ऽ री ऽ |
| × | ० | × | ० |

### अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| म – प – | ध – नी॒ सां | नी॒ ध नी॒ ध | प – म – |
| आ ऽ ये ऽ | हैं ऽ ह म | खे ऽ ल दि | खा ऽ ने ऽ |
| × | ० | × | ० |

नहीं मांगते एक दो आने = इसी तर्ज पर

फारस से बन्दर एक आया, चार मील की दुम फैलाया

देखो लड़को आया मदारी, जादू की······पिटारी की तर्ज पर होगा

लन्दन से बिल्ली एक आई, आये हैं हम खेल दिखाने के तर्ज पर गाया जायेगा

नौ मन खाती दूध मलाई, जादू की······पिटारी की तर्ज पर गाया जायेगा

इसी तरह सब अन्तरे गाये जायेंगे।

———

## कुछ काम करें

कुछ काम करें, कुछ नाम करें ।
पढ़ लिख कर होशियार बने, कुछ काम करें ॥

देश की सेवा करते जाये ।
भारत को खुशहाल बमाएँ ॥
भारत के हम लाल बने ॥।

भारत का कल्याण करे हम ।
बने जवाहर गांधी भी हम ॥
शेरों के सरदार बने ॥ (कुछ काम करें)

### (कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | — — म म |
| | | | ऽ ऽ कु छ |
| म प प नी | नी ध म म | म प प नी | नी ध म म |
| का ऽ म क | रें ऽ कु छ | ना ऽ म क | रें प ढ़ |
| × | ० | × | ० |
| म प प नी | नी ध म म | म प प नी | नी ध प म |
| लि ख क र | के ऽ हो शि | या ऽ र ब | ने ऽ कु छ |
| प म म म | म - | | |
| का ऽ म क | रें ऽ | | |
| × | ० | × | ० |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प रें | - | रें | रें | रें | - | रें | - | रें | गं | रें | गं | रें | - | सां | - |
| दे | ऽ | श | की | से | ऽ | वा | ऽ | क | र | ते | ऽ | जा | ऽ | ये | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

भारत को खुशहाल बनाये = इसी तर्ज पर

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सां | रें | रें | सां | नी | ध | प | म | म | प | प | नी | नी | ध | प | म |
| भा | ऽ | र | त | के | ऽ | ह | म | ला | ऽ | ल | ब | ने | ऽ | कु | छ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | म | म | म | म | - | × | × |
| का | ऽ | म | क | रे | ऽ | × | × |
| × | | | | ० | | | |

अगला अन्तरा इसी प्रकार गाया जायेगा

---

(१०)

## शास्त्रीय सहगान

## राग गौड़ सारङ्ग

स्थाई—

झूम झूम बदरिया बरसन आई।
नन्हीं नन्ही बूँद, पड़त झरलाई॥

अन्तरा—

कारे कारे बदरा बरसन लागे।
पवन चलत पुरवाई॥

## (तीनताल, मध्यलय)

सब लोग एक साथ स्वर में—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऩी सा ग रे | म ग प म॑ | ध प नी ध | सां – – – |

इसी को आकार में

| | | | |
|---|---|---|---|
| सां नी ध प | म॑ प म ग | म ग रे ग | रे म ग – |
| प – रे – | सा – प – | रे – सा – | प रे सा – |

एक बार स्वर में, दूसरी बार आकार में।

### स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| | – – पध म॑प | म ग म रे | सा रे ऩी सा |
| | ऽ ऽ रूऽ ऽम | भु ऽ म ब | द रि या ऽ |
| | २ | ० | ३ |
| ग रे म ग | प प पध म॑प | म रे प प | पनी सांरें सां सां |
| ब र स न | आ ई रूऽ ऽम | न न्हीं न न्ह | बुंऽ ऽऽ द प |
| × | २ | ० | ३ |
| ध म॑ पप धप | म ग | | |
| ड़ त झऽ ऽऽ | ला ई | | |
| × | २ | | |

### अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | प प सां सां | सां सां सां सां |
| | | का रे का रे | ब द रा ऽ |
| | | ० | ३ |
| गं रें मं गं | सां रें सां सां | प प सां सां | ध ध पध म॑प |
| ब र स न | ला ऽ गे ऽ | प व न च | ल त पुऽ रऽ |
| × | २ | ० | ३ |
| म ग म रे | प – | | |
| वा ऽ ऽ ऽ | ई ऽ | | |
| × | २ | | |

गाने के बाद सब लोग आलाप भी गायेंगे। आलाप सम से हैं।

| | × | २ | ० | ३ |
|---|---|---|---|---|
| (१) | नी़ सा ग रे | म ग रूम | ... | |
| (२) | म ग म ग | रे ग रूम | ... | |
| (३) | प – रे – | सा – रूम | ... | |
| (४) | प ध मं प | सां – रूम | ... | |
| (५) | सां नी ध प | मं प रूम | ... | |
| (६) | प प सां – | प प रें – | गं रें मं गं | पं – रें – |
| | सां – सां रें | सां नी ध प | मं प म ग | म ग रे ग |
| | रे म ग – | प – रे – | सा – प – | रे – सा – |
| | प – रे – | सा – रूम | झूम बदरिया, लय बढ़ा कर पूरी | |

स्थाई गाई जायेगी।

---

## ( ११ )

## सहगान नाटिका के रूप में

## रामायण गान

आओ बच्चो कहें कहानी, एक राम औ सीता की।
राजा दशरथ राज करत जहँ, नगरी एक अयोध्या की॥
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन, राजकुमार अयोध्या के।
पढ़ लिखकर विद्वान बने वे, प्राण पियारे सब जन के॥
विश्वामित्र एक दिन आये, मांगे राम लक्ष्मण को।
रक्षा मुनि की आकर कीन्हीं, मारे सारे राक्षस को॥
जनकपूर में हुआ स्वयंबर, तोड़ा राम अजय धनु को।
सीता ने जैमाल पिन्हाई, जय जय राम सियावर को॥

कैकेयी रानी मूढ़मती ने, चौदह साल दिया वन को।
चले पिता की आज्ञा लेकर, लक्ष्मण राम सिया वन को।
पन्चवटी की छाया निराली, होनहार ने काम किया।
रावण छल से सिया हरन कर, लंका को प्रस्थान किया॥
वानर दल के साथ राम ने, लंका पर छापा मारा।
बड़े बड़े राक्षस वीरों को, समर भूमि पर संघारा॥
राम ने मारा रावण को, सीता जी का उद्धार किया।
देकर राज विभीषण को, सारे जग का कल्याण किया॥
राम लक्ष्मण और सिया, वानर गण ने प्रस्थान किया।
आये अवधपूर पुष्पक से, लोगों ने जैकार किया॥
राम बने अब राजा राम, दुनिया का कल्याण किया।
राम राज हम लोग बनायें, जिससे हम खुश हाल बने॥
धन्य हमारा देश जहाँ पर, गांधी वीर जवाहर लाल।
बने जवाहर गांधी हम भी, करें देश का हम उद्धार॥

## आओ बच्चो कहें कहानी।

## ( कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय, राग भैरवी )

### स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | सा | सा | म | म | म | म | म | म | ग॒ | म | प | प | प | प | प |
| आ | ऽ | वो | ऽ | ब | ऽ | च्चो | ऽ | क | हों | ऽ | क | हा | ऽ | नी | ऽ |
| प | नी॒ | नी॒ | नी॒ | नी॒ | ध॒ | ध॒ | प | प | म | म | ध॒ | प | — | — | — |
| ए | ऽ | क | रा | ऽ | म | औ | ऽ | सी | ऽ | ता | ऽ | की | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध | प | ध | सां | सां | सां | सां | सां | नी | सां | सां | सां | नी | ध | प | प |
| रा | ऽ | जा | ऽ | द | श | र | थ | रा | ऽ | ज | क | र | त | जँ | ह |
| प | नी | नी | ध | ध | प | प | म | ग | म | ग | रे | सा | — | — | — |
| न | ग | री | ऽ | ए | ऽ | क | अ | जो | ऽ | ध्या | ऽ | की | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | प | प | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें | रें |
| रा | ऽ | म | ल | ऽ | क्ष | म | ण | भ | र | त | श | ऽ | त्रु | घ | न |
| सां | — | सां | गं | गं | रें | रें | सां | सां | | नी | रें | सां | — | — | — |
| रा | ऽ | ज | कु | मा | ऽ | र | अ | जोऽनी | | ध्या | ऽ | के | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | सां | सां | सां | सां | सां | रें | सां | नी | सां | सां | नी | नी | ध | ध | प |
| प | ढ़ | लि | ख | क | र | वि | ऽ | द्वा | ऽ | न | ब | ने | ऽ | वे | ऽ |
| प | नी | नी | ध | ध | प | प | म | ग | म | ग | रे | सा | — | — | — |
| प्रा | ऽ | ण | पि | या | ऽ | रे | ऽ | क्ष | ब | ज | न | के | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

सब अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

(१२)

## ये दिल्ली है

ये दिल्ली है, ये दिल्ली है,
यह भारत की राजधानी है, सारी दुनिया से न्यारी है ।
इतिहास बताता है इसको, ये सबके दिल की रानीं है ॥

इतिहासिक लाल किला देखो, जामा मसजिद है अलबेला ।
काश्मीरी देहली लाहौरी, अजमेरी गेट की शोभा क्या ॥

जन्तर मन्तर मीनार कुतुब, औ टुम्ब हुमांयू चिड़िया घर ।
बिरला मन्दिर औ राजघाट, बापू की अमर समाधी है ॥

इन्डिया गेट राष्ट्रपति भवन, सबसे विशाल संसद का भवन ।
मुगल गार्डन की शोभा, सारे भारत में न्यारी है ॥

पालम औ नेशनल स्टैडियम, सबसे न्यारा विज्ञान भवन ।
कनाट प्लेस चाँदनी चौक, औ सिक्खों का गुरु द्वारा है ॥

सारे भारत का सुप्रीम कोर्ट, औ रिजर्व बैंक का नया नोट ।
रहते दुनियां के राजदूत, सबके आंखों का तारा है ॥

पन्द्रह अगस्त का दिन देखो, आजादी के दिवानों का ।
छब्बीस जनवरी को देखो, भारत के फौजी ज्वानों का ॥

हम हैं भारत मां के सपूत, माडल स्कूल हमारा है ।
हम सच्चे दिल से पढ़ते हैं, जय हिन्द हमारा नारा है ॥

## (दादरा मध्यलय)

### स्थाई

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | — | रे | ग | |
| | | | | | | | | | ऽ | य | ह | |
| म | प | ग | म | रें | ग | म | प | ग | म | | | |
| दि | ल्ली | ऽ | है | ये | ऽ | दि | ल्ली | ऽ | है | | | |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | | चार बार |

### अन्तरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | — | म | म |
| | | | | | | | | | ऽ | य | ह |
| म | सां | सां | सां | सां | सां | रें | नी | ध | नी | नी | प |
| भा | र | त | की | रा | ज | धा | नी | ऽ | है | सा | ऽ |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| म | म | नी | नी | नी | — | सां | नीध | प | ध | ध | म |
| री | दु | नि | या | से | ऽ | न्या | रीऽ | ऽ | है | इ | ति |
| म | ध | ध | ध | ध | ध | नी | ध | प | प | म | ग |
| हा | स | ब | ता | ता | ऽ | है | इ | स | को | य | ह |
| रेरे | ग | — | मम | प | — | धम | मप | ग | म | | |
| सब | के | ऽ | दिल | की | ऽ | राऽ | नीऽ | ऽ | है | | |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |

## आज हिमालय की चोटी से

आज हिमालय की चोटीं से, फिर हमने ललकारा।
दूर हटो, दूर हटो, दूर हटो ऐ चीनी दुश्मन, हिन्दुस्ताँ हमारा है॥
लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट होशियार॥
नहीं रुकेगे, नहीं झुकेगे, एटम बम हथियार से।
प्राणो की बाजी दे करके, तुमको आज भगाना है॥
तुम चीनी की क्या हिम्मत, जो देश के भीतर घुस आये।
आज भगाकर तब दम लेगे, यही हमारा नारा है॥
जाग उठो भारत वीरो, आज दिखादो दुनिया को।
मातृ भूमि पर किसी की क्या, हिम्मत जो आंख उठाने को॥

(कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा सा गग गम | प प प प | सांमां सांसां नी पप | ध ध प – |
| आ ज हिमा लय | की चो टी से | फिर हम ने लल | का रा है ऽ |
| × | ० | × | ० |
| सां सांसां सां – | सां सांसां सां – | सां सांसां सां प | धध ध प म |
| दू रह टो ऽ | दू रह टो ऽ | दू रह टो ऐ | चीनी दु श्म न |
| × | ० | | |
| प धध पप सा | रे रे सा – | प प ग गग | प प ग गग |
| हि न्दुस तान ह | मा रा है ऽ | ले फ्ट रा इट | ले फ्ट रा इट |
| प प ग गग | गं गंरें सां ऽ | | |
| ले फ्ट रा इट | हो ऽशि या र | | |

३ बार लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, होशियार होगा।

अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| पग -ग प प | पसां -सां सां सां | [?] धध सांसां रेंरें | गं रेंरें सां - |
| नहि ऽरु कें गे | नहि ऽरु कें गे | ए टम बम हथि | या ऽर से ऽ |
| × | ० | × | ० |
| गं गं गं गं | रें रें सांसां सां | गंगं गं गं गंसां | रें रें सां - |
| प्रा णों की बा | जी दे कर के | तुम को आ जभ | गा ना है ऽ |

दूर हटो, दूर हटो, दूर हटो ऐ चीनो दुश्मन हिन्दुस्तान हमारा है।
सारे अन्तरे इसी प्रकार से गाये जायेंगे।

---

( १४ )

## इन्कलाब जिन्दाबाद

जगो जगो जगो, उठो उठो उठो, चलो चलो चलो।
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद ॥
वन्दे मातरम,वन्दे मातरम, यही हमारा नारा है यही हमारा नारा है।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बहादुरों ॥
भारतवर्ष हमारा है, सबको प्राणों से प्यारा है।
मातृ भूमि की रक्षा का, अब पहला कदम हमारा है ॥
(इन्कलाब जिन्दाबाद वन्देमातरम)

द्वार खड़े वैरी को देखो, जिसको खून सवार है।
मार भगाओ दुश्मन को, अब यही हमारा नारा है ॥
(इन्कलाब जिन्दाबाद वन्देमातरम)

देखो चीनी दुश्मन आया, भारत माँ को आज सताया।
प्राणों की बाजी देकर, भारत की लाज बचाना है ॥
(इन्कलाब जिन्दाबाद वन्देमातरम)

(कहरवा, ८ मात्रा; मध्यलय)

स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | — — — सा |
| | | | ऽ ऽ ऽ ज |
| ग सा ग सा | ग — — ग | प ग प ग | प — — प |
| गो ज गो ज | गो ऽ ऽ उ | ठो उ ठो उ | ठो ऽ ऽ च |
| × | ० | × | ० |
| सां प सां प | सां — प प | गं — — — | — — गं रें |
| लो च लो च | लो ऽ इ न्क | ला ऽ ऽ ऽ | ऽ ब जिं दा |
| × | ० | × | ० |
| सां — — — | — — प — | सां — — — | — ध — ध |
| बा ऽ ऽ ऽ | ऽ दे व ऽ | न्दे ऽ ऽ ऽ | ऽ मा ऽ त |
| × | ० दो बार | × | ० |
| प — — — | — — — — | (वन्दे मातरम् भी २ बार गाओ) | |
| रम् ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | | |
| × | ० | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पप प ग सा | रे रे सा — | पप प ग सा | रे रे सा सा |
| यही ह मा रा | ना रा है ऽ | यही ह मा रा | ना रा है ब |
| × | ० | × | ० |
| प — प ग | — ग प — | प ग — ग | प — प ग |
| ढ़े ऽ च लो | ऽ ब ढ़े ऽ | च लो ऽ ब | ढ़े ऽ च लो |
| × | ० | × | ० |
| — ग गं ऽ | रें सां — सां | प — प ग | — ग प — |
| ऽ ब हा ऽ | दु रो ऽ ब | ढ़े ऽ च लो | ऽ ब ढ़े ऽ |
| प ग — ग | प — प ग | — ग गं ऽ | रें सां — सां |
| च लो ऽ ब | ढ़े ऽ च लो | ऽ ब हा ऽ | दु रों ऽ ऽ |

बढ़े चलो, बढ़े चलो २ बार पूरा गाइये।

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | धध | प | पग | प | ध | ध | धध | प | ध | प | पग | प | ध | ध | — |
| भा | रत | व | र्षह | मा | रा | है | सब | को | प्रा | णों | सेऽ | प्या | रा | है | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| गं | गंगं | -गं | गं | रें | रें | सां | सांसां | गंगं | गं | गं | गंसां | रें | रें | सां | — |
| मा | तृभू | ऽमि | की | र | क्षा | का | अब | पह | ला | का | मह | मा | रा | है | ऽ |

इन्कलाब जिन्दाबाद से पूरी स्थाई गाइये
इसी तरह और अन्तरे गाये जायेंगे।

---

(१८)

## ऊँ जय जगदीश हरे

ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, छिन में दूर करे॥ (ऊँ जय)

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मनका।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ (ऊँ जय)

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ (ऊँ जय)

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ (ऊँ जय)

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूरख खलकामी कृपा करो भरता। (ऊँ जय)

तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पती।
किस विधि मिलू गुसांई, तुमको मैं कुमती॥ (ऊँ जय)

दीन बन्धु दुख हरता, ठाकुर तुम मेरे।
अपने हांथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ (ऊँ जय)

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ (ऊँ जय)

## प्रचलित सरल जगदीश हरे की धुन में

(कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

### स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | – | – | म | |
| | | | | | | | | | | | | ऽ | ऽ | ओं | म |
| | | | | | | | | | | | | 0 | | | |
| म | – | म | म | म | म | ग | म | प | – | – | – | – | – | प | ध |
| जै | ऽ | ज | ग | दी | ऽ | श | ह | रे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | स्वा | मी |
| × | | | | 0 | | | | × | | | | 0 | | | |
| ध | नी | नी | सां | रें | सां | नी | ध | नी | प | – | – | – | – | – | – |
| जै | ऽ | ज | ग | दी | ऽ | श | ह | रे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| प | ध | प | ध | नी | नी | ध | प | प | ध | म | म | म | प | प | प |
| भ | ऽ | क्त | ज | न | न | के | ऽ | सं | ऽ | क | ट | छि | न | में | ऽ |
| × | | | | 0 | | | | × | | | | 0 | | | |
| ध | प | म | ग | म | रें | रें | प | | | | | | | | |
| दू | ऽ | र | क | रे | ऽ | ओं | म | | | | | | | | |

### अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | प | म | म | प | प | म | म | प | – | म | – | प | ध | नी | सां |
| जो | ऽ | ध्या | ऽ | वे | ऽ | फ | ल | पा | ऽ | वे | ऽ | दु | ख | बि | न |
| × | | | | 0 | | | | × | | | | 0 | | | |
| नी | ध | प | म | ध | प | – | – | प | प | प | ध | ध | नी | नी | ध |
| से | ऽ | म | न | का | ऽ | ऽ | ऽ | सु | ख | स | म् | प | ती | घ | र |
| प | ध | ध | प | म | प | प | प | ध | प | म | ग | रे | – | – | – |
| आ | ऽ | वे | ऽ | क | ऽ | ष्ट | मि | टे | ऽ | त | न | का | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | 0 | | | | × | | | | 0 | | | |
| रे | प | प | प | ध | प | म | ग | म | – | – | – | – | – | म | म |
| जै | ऽ | ज | ग | दी | ऽ | श | ह | रे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ओं | म |

अगले सारे अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे

## (१६)

## हे हरि मुरली आज बजादो

हे हरि मुरली आज बजादो

कृष्णकुन्ज के भीतर कृष्ण कन्हैया मीठी तान सुनादो।
थके पुकार पुकार तुम्हे हम, बालक हैं अनजान प्रभो।
प्राणों से प्यारे मनमोहन, क्यों रूठे हो आज बतादो॥ (हे हरि)

कोटि कोटि अघ भरे हृदय में, घोर अंधेरा है छाया।
अन्तर ज्योंति जलाने को हरि, उर की होली आज जलादो॥ (हे)

स्वारथ के सब लोग जगत में, देता कोई साथ नहीं।
अशरण शरण गरीब निवाज, हमारी बिगड़ी आज बनादो॥ (हे हरि)

### (कहरवा, ८ मात्रा, मध्यलय)

स्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नी | सा | ग | म | प | नी | ध | प | ग | रे | ग | म | सा | रे | सा | — |
| हे | ऽ | ह | रि | मु | र | ली | ऽ | आ | ऽ | ज | ब | जा | ऽ | दो | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| प | - | प | प | प | — | धप | म | प | ध | नीं | सां | प | नी | ध | प |
| कृ | ऽ | ष्ण | कुं | ऽ | ज | केऽ | ऽ | भी | ऽ | त | र | कृ | ऽ | ष्ण | क |
| ग | सा | ग | म | प | नी | ध | प | ग | रे | ग | म | सा | रे | सा | — |
| न्है | ऽ | या | ऽ | मी | ऽ | ठी | ऽ | ता | ऽ | न | सु | ना | ऽ | दो | ऽ |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध | - | ध | म | ध | ध | नी | नी | सां | - | सां | सां | धनी | सांरें | सां | - |
| थ | के | ऽ | पु | का | ऽ | र | पु | काऽ | | र | तु | म्हेऽ | ऽऽ | ह | म |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| नी | - | नी | नी | सां | - | सां | सां | धनी | सांरें | नी | सां | ध | - | प | - |
| बा | ऽ | ल | क | हैं | ऽ | अ | न | जाऽ | ऽऽ | न | प्र | भु | ऽ | ऽ | ऽ |

प्राणों से प्यारे मन मोहन, क्यों रूठे हो आज बतादो
कृष्ण कुन्ज के······· तान सुनादो, के तर्ज पर होगी इसी प्रकार सब अंतरे गाइये।

---

(१७)

## प्रार्थना

रचा प्रभु तूने यह, ब्रह्मान्ड सारा।
प्राणों से प्यारा, तू ही सबसे न्यारा॥

तू ही भाई बन्धू, तू ही जगत जननी।
सकल जगत में, एक तेरा पसारा॥

धर्म दूध से माता, तुम हमको पालो।
देवो दान विद्या का, अपने भन्डारा॥

निवा कर शोश प्रभु, विनती तुम्हारी।
देवो दान भक्ति का, होवे निस्तारा॥

## स्वरलिपि आसान करके

### ( ताल दादरा, राग भैरवी )

#### स्थाई

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्रु | प | – | ध्रु | प | – | प | नी | ध्रु | प | ग | म |
| र | चा | ऽ | प्र | भु | ऽ | तु | ऽ | ने | ऽ | य | ह |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| प | नी | ध्रुप | ग | म | ऽ | रे | ऽ | नी | सा | – | – |
| ब्र | म | हांऽ | ऽ | ड | ऽ | सा | ऽ | ऽ | रा | ऽ | ऽ |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | ग | ग | ग | ग | ग | सा | ग | म | प | ग | म |
| प्रा | ऽ | णों | ऽ | से | ऽ | प्या | ऽ | ऽ | ऽ | रा | ऽ |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| प | नी | ध्रु | प | ग | ग | प | म | रे | – | सा | – |
| तु | ऽ | ही | ऽ | स | ब | से | ऽ | न्या | ऽ | रा | ऽ |

#### अन्तरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्रु | – | म | ध्रु | – | नी | ध्रुनी | सारें | नी | सां | – | – |
| तु | ऽ | ही | भा | ऽ | ई | बंऽ | ऽऽ | ऽ | धू | ऽ | ऽ |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| नी | नी | नी | सां | सां | सां | ध्रुनी | सांरें | सां | ध्रु | प | – |
| तु | ऽ | हि | ज | ग | त | जऽ | ऽऽ | न | नी | ऽ | ऽ |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सां | रें | सां | नी | सां | नी | ध्रु | नी | ध्रु | प | ध्रु | प |
| स | क | ल | ज | ग | त | में | ऽ | ऽ | ए | ऽ | क |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| म | म॑ | म | ग | – | म | रे | – | नी | सा | – | – |
| ते | ऽ | ऽ | रा | ऽ | प | सा | ऽ | ऽ | रा | ऽ | ऽ |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नी | ध | नी | नी | — | — | नीध | नीध | पम | मम | म | म |
| ध | ऽ | मं | दू | ऽ | ध | सेऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽऽ | मा | ऽ |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| प | — | — | — | प | प | प | ध | नी | सां | — | — |
| ता | ऽ | ऽ | ऽ | तु | म | ह | म | को | ऽ | ऽ | ऽ |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध | — | — | प | — | — | प | — | — | — | मप | धप |
| पा | ऽ | ऽ | लो | ऽ | ऽ | दे | ऽ | वो | ऽ | दाऽ | ऽन |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| म | — | — | — | — | — | ग | म | प | नी | ध | प |
| वि | ऽ | द्या | ऽ | ऽ | ऽ | का | ऽ | ऽ | ऽ | अ | प |
| ग | — | — | — | प | म | रे | — | नी | सा | — | — |
| ने | ऽ | ऽ | ऽ | भ | न | डा | ऽ | ऽ | रा | ऽ | ऽ |

निवा कर शीश भी इसी अन्तरे की तरह गायें।

---

(१८)

## रघुपति राघव राजा राम

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।
ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सम्मति दे भगवान॥

(कहरवा ८ मात्रा मध्यलय)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | ग | म | प | ग | म | ग | रे | रे | ग | प | — | मप | धनी | ध | नी |
| र | घु | प | ति | रा | ऽ | घ | व | रा | ऽ | जा | ऽ | राऽ | ऽऽ | ऽ | म |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| प | नी | ध | प | ग | म | रे | ग | प | नी | ध | प | म | — | — | — |
| प | ति | ऽ | त | पा | ऽ | व | न | सी | ऽ | ता | ऽ | रा | ऽ | ऽ | म |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | म | ध | ध | ध | – | ध | ध | नीध | पम | पध | नीसां | नी | – | – | – |
| र | घु | प | ति | रा | ऽ | घ | व | राऽ | ऽऽ | जाऽ | ऽऽ | रा | – | – | म |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | नी | – | नी | सां | – | रें | सां | नीध | – | प | ध | म | – | – | – |
| प | ति | ऽ | त | पा | ऽ | व | न | सी | ऽ | ता | ऽ | रा | ऽ | ऽ | म |

दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार गाया जायेगा

---

(१६)

## हिन्द के जवान हम

### स्काउट गाना

### दोहा

मातृ भूमि के लिये, जो करता रक्त का दान।
उसका जीवन देव तुल्य है, है उसका जीवन महान ॥

गाना

हिन्द के जवान हम, हिन्द की हैं शान हम।
हिन्द के निशान को, बुलन्द हम किये चले ॥
प्रबल ज्वाल भाल हों, आंधियां कराल हों।
जलधि गगन भूमि पर, तने प्रलय के जाल हों ॥
किन्तु हम रुकें नहीं, चले चलें बढ़े चलें ॥।
हिन्द हेतु जान दें, हिन्द हेतु जान दें।
हिन्द हेतु हम सभी, सहर्ष रक्त दान दें ॥
जय हिन्द, जय हिन्द, बोलते चले चलें ॥।

### दोहा एक साथ, बिना ताल के साथ

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | – | ग | प | – | प | ध | – | प | ध | – | – | सां | – | सां | सां |
| मा | ऽ | तृ | भु | ऽ | मि | के | ऽ | लि | ये | ऽ | ऽ | जो | ऽ | क | र |
| सां | – | सां | – | रें | ध | सां | – | – | – | – | – | – | – | सां | रें |
| ता | ऽ | र | ऽ | क्त | का | दा | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | उ | स |
| रें | – | रें | – | – | – | रें | – | रें | सां | रें | गं | सां | – | गं | – |
| का | ऽ | जी | ऽ | व | न | दे | ऽ | व | तु | ऽ | ल्य | है | ऽ | है | ऽ |
| गं | रें | गं | – | गं | रें | रें | रें | ध | सां | – | – | – | – | – | – |
| उ | स | का | ऽ | जी | ऽ | व | न | म | हा | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | न | ऽ |

### (दादरा, मध्यलय)

#### स्थाई

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | – | सा | ग | – | सा | ग | – | ग | ग | – | – |
| हि | ऽ | न्द | के | ऽ | ज | वा | ऽ | न | हम | ऽ | ऽ |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| ग | प | प | प | – | ग | प | – | प | प | – | – |
| हि | ऽ | न्द | की | ऽ | हैं | शा | ऽ | न | हम | ऽ | ऽ |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | ध | ध | प | ग | प | ध | – | ध | ध | – | – |
| हि | ऽ | न्द | के | ऽ | नि | शा | ऽ | न | को | ऽ | बु |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| सां | – | गं | रें | – | सां | नी | ध | नी | सां | – | – |
| ल | ऽ | न्द | हम | ऽ | कि | ये | ऽ | च | ले | ऽ | ऽ |

## अन्तरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | — | — | प |
| | | | | | | | | | ऽ | ऽ | प्र |
| ग | — | ग | प | — | प | ध | — | ध | ध | — | — |
| बल | ऽ | ऽ | उज्ञा | ऽ | ल | भा | ऽ | ल | हों | ऽ | ऽ |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| ध | सां | ध | प | — | ध | सां | — | सां | सां | — | सां |
| आँ | ऽ | धि | या | ऽ | क | रा | ऽ | ल | हो | ऽ | ज |
| ध | ध | ध | सां | सां | सां | रें | — | रें | सां | — | सां |
| ल | धि | ग | गन | ऽ | के | भू | ऽ | मि | पर | ऽ | त |
| × | | | ० | | | × | | | ० | | |
| गं | — | गं | गं | — | सां | रें | — | रें | सां | — | — |
| ने | ऽ | प्र | ल | ऽ | के | जा | ऽ | ल | हों | ऽ | ऽ |
| गं | — | रें | गं | — | सां | रें | — | ध | सां | — | सां |
| कि | ऽ | न्तु | हम | ऽ | रू | के | ऽ | न | हीं | ऽ | ब |
| २ | | | ० | | | × | | | ० | | |
| प | — | ध | सां | — | रें | गं | — | रें | सां | — | — |
| ढ़ | ऽ | च | ले | ऽ | ब | ढे | ऽ | च | लें | ऽ | ऽ |

दूसरा अन्तरा भी इसी अन्तरे की तरह गायें।

जय हिन्द जय हिन्द बोलते चले चलें ॥

अन्त में ३ बार गाइये

---

## राष्ट्र गीत

जन गण मन, अधिनायक, जय हे, भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा, द्राविण उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मंगल दायक जय हे भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे॥

(विश्व भारती स्वर-लिपि प्रकाशित, सूचना एवं प्रसार मंत्रालय भारत सरकार द्वारा, ३३ कण स्वरों के साथ)

स | म

सा रे ग ग | ग ग ग ग | ग – ग ग | रे ग म –

ज न ग ण | म न अ धि | ना ऽ य क | ज य हे ऽ

म | स

ग – ग ग | रे – रे रे | नी रे सा – | – – सा –

भा ऽ र त | भा ऽ ग्य वि | धा ऽ ता ऽ | ऽ ऽ पं ऽ

स | प | मे ध

प – प प | – प प – | प – प मे | प मे प –

जा ऽ ब सिं | ऽ धु गुज ऽ | रा ऽ त म | रा ऽ ठा ऽ

म

म – म म | म – म ग | रे म ग – | – – – –

द्रा ऽ वि ण | उत् ऽ क ल | बं ऽ ग ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

स | | रे | प
ग - ग ग | ग - ग रे | प प प म | म - म -
विं ऽ ध्य हि | मा ऽ च ल | य मु ना ऽ | गं ऽ गा ऽ

| ग | स |
ग - ग ग | रे रे रे रे | नी़ रे सा - | - - - -
उ ऽ च्छ ल | ज ल धि त | रं ऽ ग ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

| | म |
ग ग ग ग | ग - ग म | रे ग म - | - - - -
त व शु भ | ना ऽ मे ऽ | जा ऽ गे ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

म | म | ग |
ग म प प | प - म ग | रे म ग - | - - - -
त व शु भ | आ ऽ शि स | मा ऽ गे ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

सा | ग | रे |
ग - ग - | रे रे रे रे | नी़ रे सा - | - - - -
गा ऽ हे ऽ | त व ज य | गा ऽ था ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

स | | | प ध
प प प प | प - प मं | प - प प | मं ध प -
ज न ग ण | मं ऽ ग ल | दा ऽ य क | ज य हे ऽ

| म | ग म |
म - म म | ग - ग गम | रे म ग - | - - नी नी
भा ऽ र त | भा ऽ ग्य वि | धा ऽ ता ऽ | ऽ ऽ ज य

नी | सां | ध |
सां - - - | - - नी ध | नी - - - | - - प प
हे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ज य | हे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ज य

प | | ध | ग
ध - - - | - - - - | सा सा रे़ रे | ग ग रे ग
हे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ज य ज य | ज य ज .

म |
म - - - | - - - - |
हे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |

# दूसरा अध्याय

## सङ्गीत शास्त्र का प्रारम्भिक ज्ञान

संगीत :—ललित कलाओं में संगीत कला का स्थान सबसे ऊँचा माना गया है। कलाकार स्वर तथा ताल के द्वारा अपनी छोटी सी छोटी भावनाओं को प्रगट करता है, गायक गाने के द्वारा, वादक वादन द्वारा। नृत्यकार नृत्य के द्वारा। संगीत कला में तीनों कलाओं का समावेश है।

भारत में संगीत पद्धतियाँ दो प्रकार की हैं :—

१—कर्नाटक (दक्षिण पद्धति)- इसका प्रचार मद्रास, आन्ध्र, मैसूर आदि में है।

२—उत्तरी हिन्दुस्तानी संगीत—जो भारत के अन्य प्रान्तों में गाई जाती है।

नाद :—नाद ब्रह्म का अंश माना जाता है। जो आवाज कानों को अच्छा लगे और संगीत के लिये उपयोगी हो तथा जिस आवाज में स्थिरता, मधुरता तथा आकर्षण शक्ति हो उसे नाद कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं।

१—नाद का छोटा और बड़ा होना

२—नाद की जाति अथवा गुण

३—नाद की उँचाई और निचाई

श्रुति :—नाद की ऊँचाई २२ प्रकार की मान ली गई है, उसकोश्रुति कहते हैं।

**स्वर :**—२२ श्रुतियों में सात मुख्य स्थानों को स्वर कहते हैं। ये शुद्ध स्वर कहलाते हैं।

७ शुद्ध स्वर—सा (षडज) रे (रिषभ) ग (गन्धार) म (मध्यम) प (पंचम) ध (धैवत) नी (निषाद)

**विकृत स्वर :**—जो स्वर अपनी जगह से घटते-बढ़ते हैं उसे विकृत स्वर कहते हैं ये पाँच होते हैं।

कोमल स्वर व तीव्र स्वर

रे ग ध नी व मं

**कोमल स्वर :**—जो स्वर शुद्ध स्वर की अपेक्षा कम हों।

**तीव्र स्वर :**—जो शुद्ध स्वर की अपेक्षा ज्यादा हों।

**सप्तक :**—सा से दूसरे सा के बीच के स्थान को एक सप्तक कहते हैं।

साधारणतः सप्तक तीन होते हैं। (१) मन्द्र सप्तक (२) मध्य सप्तक (३) तार सप्तक

१—मन्द्र सप्तक = इसके स्वरों के उच्चारण से गले पर अधिक जोर पड़ता है।

२—मध्य सप्तक = मध्य माने बीच का, इन स्वरों के उच्चारण से गले पर अधिक जोर नहीं पड़ता है।

३—तार सप्तक = इनके स्वरों के उच्चारण से दिमाग व तालू स्थान पर जोर पड़ता है।

**आरोह :**—क्रमानुसार स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहते हैं।

**अवरोह :**—क्रमानुसार स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहते हैं।

**अलंकार :**—क्रमानुसार स्वरों की विशेष प्रकार की रचनाओं को अलंकार कहते हैं। आगे १० अलंकार अभ्यास के लिये लिखे गये हैं।

# अलंकार

(१) सा रे ग म प ध नी सां, सां नी ध प म ग रे सा

(२) सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां
सांनीध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा

(३) सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनी, पधनीसां
सांनीधप, नीधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा

(४) सारेगमप, रेगमपध, गमपधनी, मपधनीसां
सांनीधपम, नीधपमग, धपमगरे, पमगरेसा

(५) सारे सारेग, रेग रेगम, गम गमप, मप मपध, पध पधनी, धनी धनीसां
सांनी सांनीध, नीध नीधप, धप धपम, पम पमग, मग मगरे, गरे गरेसा

(६) साग, रेम, गप, मध, पनी, धसां
सांध, नीप, धम, पग, मरे, गसा

(७) सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनीधप, धसांनीध
धनीसांध, पधनीप, मपधम, गमपग, रेगमग, सारेगस

(८) सारे, रेग, गम, मप, पध, धनी, नीसां
सांनी, नीध, धप, पम, मग, गरे, रेसा

(९) सारेसा, सारेगरेसा, सारेगमगरेसा, सारेगमपमगरेसा, सारेगमपध-पमगरेसा, सारेगमपधनीधपमगरेसा, सारेगमपधनीसांसांनीधपमगरेसा

(१०) सांनीसां, सांनीधनीसां, सांनीधपधनीसां, सांनीधपमपधनीसां, सां-नीधपमगमपधनीसां, सांनीधपमगरेगमपधनीसां, सांनीधपमगरेसा सारे-गमपधनीसां।

नोट—ये अलंकार बारी बारी से शुद्ध, कोमल व तीव्र स्वरों में भी अभ्यास किए जायेंगे।

लय :—समय की बराबर चाल को लय कहते हैं। यह मोटे तौर से ३ प्रकार के माने जाते हैं।

१—विलंबित लय—जिस लय की चाल बहुत धीरे धीरे हो।

२—मध्य लय—जो न तेज हो, न धीरे हो मध्य लय की चाल की हो।

३—द्रुत लय—जो लय जल्दी जल्दी से चले।

**मात्रा** :—लय की नियमित गति को नापने की सबसे छोटी इकाई को एक मात्रा कहते हैं, एक सेकेन्ड को हम एक मात्रा कह सकते हैं।

**ताल** :—समय नापने के लिए हम मात्राओं की बनी एक समूह रचना को ताल का नाम रख देते हैं। जैसे ४ मात्रा का कहरवा ताल, १० मात्रा का झपताल, १६ मात्राओं वाली तीनताल वगैरह।

**विभाग** :—ताल की मात्राओं को अलग अलग खंडों में बांट दिया जाता है, जिसके खंडों के समझ लेने पर ताल का वजन विभागों के अनुसार बराबर रहता है।

**ताली** :—ताल के अलग-अलग विभागों के शुरू में सम के अलावा, जिन मात्राओं पर हाथ से ताली देते हैं उसे हम ताली कहते हैं।

**खाली** :—ताल के जिस विभाग को ताली दिये बगैर अलग दिखाया जाता है उसे खाली कहते हैं।

**सम** :—ताल की पहली मात्रा जहाँ से ताल शुरू होता है, उसे सम का स्थान कहते हैं। यहाँ विशेष जोर देते हैं।

**आवर्तन** :—निश्चित मात्राओं के बने हुये ताल को एक बार बजाने को एक आवर्तन कहते हैं।

## (१) कहरवा ताल

मात्रा ८, विभाग २, ताली एक पर, खाली ५ पर

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धा गी | न ति | \| | न क | धि न |
| × | | | ० | | |

## (२) दादरा ताल

मात्रा ६, विभाग २, ताली १ पर, खाली ४ पर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| धा | धी | ना | \| | धा | ती | ना |
| × | | | | ० | | |

## (३) एकताल

मात्रा १२, विभाग ६, ताली १, ५, ६, ११, खाली ३, ७

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| धीं धीं | धागे तिरकिट | तू ना | क त्ता | धागे तिरकिट | धी ना |
| × | ० | २ | ० | ३ | ४ |

## (४) चारताल

मात्रा १२, विभाग ६, ताली १-५-६-११, खाली ३-७

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धा धा | दिं ता | किट धा | दिं ता | किट तक | गदि गन |
| × | ० | २ | ० | ३ | ४ |

## (५) तीन ताल

मात्रा १६, विभाग ४, ताली १-५-१३, खाली ९ पर

| | | | |
|---|---|---|---|
| धा धीं धीं धा | धा धीं धीं धा | धा तीं तीं ता | ता धीं धीं धा |
| × | २ | ० | ३ |

## (६) झपताल

मात्रा १०, विभाग ४, ताली १-३-८, खाली ६ पर

| | | | |
|---|---|---|---|
| धी ना | धी धी ना | ती ना | धी धी ना |
| × | २ | ० | ३ |

**थाट** :—या मेल, सातो स्वरों के उस समूह को कहते हैं जिससे राग उत्पन्न हों। नाद से स्वर बने, स्वरों से सप्तक, सप्तक से थाट तैयार होते हैं।

**राग** :—स्वरों की खास रचना जो वर्णों से अलंकृत हो जो चित्त को रंजन करे उसे राग कहते हैं।

**३ मुख्य राग जाति** :—७ स्वरों का सम्पूर्ण, ६ स्वरों का षाडव, ५ स्वरों का औडव, इसी से ६ उप जातियाँ और बनती हैं जैसे सम्पूर्ण षाडव, सम्पूर्ण औडव, षाडव सम्पूर्ण, षाडव औडव, औडव सम्पूर्ण, औडव षाडव।

**वादी स्वर** :—राग में जो स्वर सबसे अधिक लिया जाता हो व विशेष महत्व रखता हो उसे राजा की उपमा दी जाती है। उसे वादी स्वर कहते हैं।

**सम्वादी** :—जो स्वर वादी स्वर से कम तथा अन्य स्वरो से ज्यादा महत्व रखता हो उसे मन्त्री की उपमा दी जाती है। उसे सम्वादी स्वर कहते हैं।

**अनुवादी** :—वादी व सम्वादी स्वर के अलावा राग में जितने स्वर होते हैं उन्हें अनुवादी स्वर कहते हैं इसे सेवकों की उपमा दी जाती है।

**विवादी** :—जिस स्वर के लगने पर राग की हानि होती है गाते समय उन रागों में उसे छोड़ दिया जाता है उसे वर्जित स्वर या विवादी स्वर कहते हैं। इसे शत्रु की उपमा दी जाती है।

**पकड़** :—स्वरों का विशेष समुदाय जिसको सुनने से राग सुगमता से पहचाना जाये, उसे पकड़ कहते हैं।

**आलाप** :—स्वरों को आकार में गाने को आलाप कहते हैं। इसमें ताल का बन्धन नहीं होता है। कोई गायक नोम तोम में आलाप करते हैं यह सुनने में विचित्र आनन्द मिलता है।

**तान** :—स्वरों को जल्दी २ गाने को तान कहते हैं। इसके बहुत प्रकार होते हैं जैसे शुद्ध तान, कूट तान, सपाट तान वगैरह।

**स्थाई** :—गाने का पहला भाग जिसकी रचना मन्द्र व मध्य सप्तक में होती है उसे स्थाई कहते हैं। या वादन में गत की स्थाई कहते हैं।

**सन्चारी** :—गाने का तीसरा भाग जिसकी रचना मन्द्र, मध्य व तार सप्तक में होती हैं उसे सन्चारी कहते हैं।

**आभोग** :—गाना जिस भाग में समाप्त किया जाता है उसे आभोग कहते हैं।

**अन्तरा** :—गाने का दूसरा भाग जिसकी रचना मध्य या तार सप्तक में होती है उसे अन्तरा कहते हैं। वादन में गत का अन्तरा कहते हैं।

**लक्षण गीत** :—जिस गीत में राग, स्वर, जाति, समय, वादी-संवादी सब बाते उसी गीत के गाने से पता चले और उसी राग में गाया भी जाय उसे लक्षण गीत कहते हैं।

**स्वर मालिका** :—या सरीगम, केवल अलग अलग राग और ताल में जो सरगम गाई जाती है उसे स्वर मालिका या सारीगम कहते हैं।

**ठाह** :—गाते समय स्वाभाविक लय में तथा बराबर की लय में हम जो ताल देते रहते हैं उसे ठाह की लय कहते हैं।

**दुगुन** :—एक मात्रा को २ भागों में बराबर की लय में बाँटकर दिखाने को दून कहते हैं।

**तिगुन** :—मात्रा के तीन भाग बराबर बराबर लय में बाँटकर दिखाने को तिगुन की लय बनती है।

**चौगुन** :—मात्रा में बराबर बराबर ४ भाग लय में बाँटकर दिखाने को चौगुन कहते हैं।

# गायकों के अवगुण

दांतपीस कर गाना, नीरस गाना, चीखकर गाना, हांथ पैर पटकना शरीर व आवाज में कंपन न हो, भयावने ढंग से मुह फाड़ कर गाना, कौवे के समान कंठ से गाना, बेताल गाना, गर्दन ऊँची करके गाना, बकरे की तरह मुह बनाके गाना, मुह माथा गर्दन की नसे फुला कर गाना, तुम्बे की तरह गाल फुलाकर गाना, वर्ज्य स्वर लगे, गीत शब्द साफ साफगाना, तीनो सप्तकों में न गाना, गायन व्यवस्था का अभाव होना, राग शुद्ध करके न गाना, इत्यदि ।

(बच्चो तुम्हे इन दोषों के हमेशा बचना चाहिये )

# आजकल के गीत तीन प्रकार के हैं

शास्त्रीय संगीत (पक्के गाने) — जैसे ध्रुपद, बड़ा ख्याल छोटा ख्याल, टप्पा, होरी, तराना, चतुरंग, स्वर मालिका, लक्षण गीत, इत्यादि ।

सुगम शास्त्रीय संगीत — ठुमरी, दादरा

सुगम संगीत (लाइट म्यूजिक) — लोकगीत, सिनेमा के गाने रेडियो के गाने, गजले, देश भक्ति के गाने इत्यादि ।

वर्ण :—गाने की क्रिया को वर्ण कहते है । ये चार प्रकार के होते हैं ।

स्थाई वर्ण :—एक ही स्वर को बार-बार दोहराने को स्थाई वर्ण कहते हैं जैसे सा सा सा सा, रे रे रे रे ।

आरोही वर्ण :—चढ़ते क्रम के स्वरों को गाने को आरोही वर्ण कहते हैं । जैसे—सा रे ग म प ध नी सां ।

**अवरोही वर्ण** :—उतरते क्रम के स्वरों के गाने को अवरोही वर्ण कहते हैं। जैसे—नी ध प म ग रे।

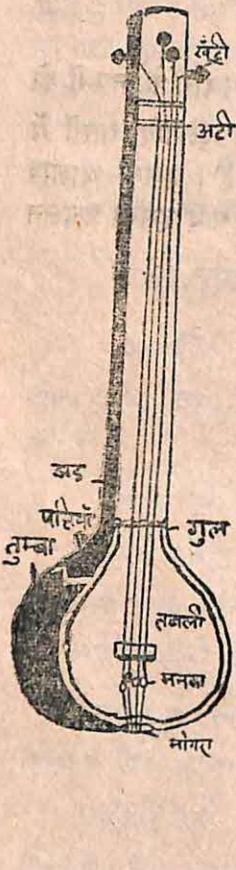
**सन्चारी वर्ण** :—स्थाई, आरोही व अवरोही वर्णों को मिला देने से सन्चारी वर्ण कहलाता है। जैसे—स स, ग ग, म ग रे स, म प ध सां इत्यादि।

**ख्याल** :—ख्याल का अर्थ विचार या कल्पना है। राग के नियमों को पालन करते हुये गीतों को एक ताल, झूमरा, तीनताल इत्यादि तालों में विलम्बित तथा द्रुत लयों में गाने को ख्याल कहते हैं। इसमें आलाप तानों का विविध प्रकार से विस्तार करते हैं। ध्रुपद के बाद इसका प्रचलन बढ़ा। इसमें शृंगार, भक्ति रस की प्रधानता रहती है।

———

# तानपूरा

विद्वानों का मत है कि इसे तुम्बुरू नामक गंधर्व ने बनाया था। यह ६० प्रकार के वीणाओं में से एक तरह का है। इनका नाम तम्बूरा व फिर बदलते बदलते तानपूरा हो गया। इसमें चार तार होते हैं जिसको दाहिने हांथ की तर्जनी व मध्यमा उँगली से बजाया जाता है। इसके स्वर झन्कार में गायक वादक अपने कला की कल्पना में खो जाता है। इसमें गत नहीं निकलता केवल स्वर झन्कार निकलते हैं। यह स्वर साधन के काम आता है इसमें ३ तार सा स्वर में व एक तार प में मिलाया जाता है। इसमें ब्रिज के ऊपर ४ छोटे छोटे डोरे तारों के नीचे लगे रहते हैं, इनसे झन्कार बड़े जोरों से निकलता है।इसके अंगो में तुम्बा, डाड़, तबली, ब्रिज, लगोट, अटी, तार गहन, गुलू, खूटिंया, मनका, सूत, इत्यादि हैं। इसको कोई गोद में रखकर, कोई जमीन पर लिटा कर, कोई एक घुटना मोड़कर और एक घुटना कुछ ऊँचा कर के बजाया या छेड़ता है।



# सितार

यह वीणा का परिष्कृत रूप है। सितार शब्द फारसी का है, इसके बनाने व प्रचार में लाने का श्रेय हजरत अमीर खुसरो को है। यह १४वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के दरबार के कवि व सङ्गीतज्ञ थे। पहले ३ तार फिर धीरे धीरे ७ तारों वाला बन गया, लोग सहतार से सितार कहने लगे। तानसेन के पुत्र सूरतसेन ने इसको और संशोधित किया।



इसको बजाने के लिये तार का एक टेढ़ा मेढ़ा बना मिजराब दायें हाथ की तर्जनी अंगुली में पहन कर बजाया जाता है, इसके अंगों के नाम तुँबा, डांड, गुलू, लगोट, घुड़च, जवारी, तबली, तारगहन, परदे, तरबे, खूटियाँ मनका, मिजराब वगैरह है। इसमें १६ से २४ परदे बँधे होते हैं। इसके बोल दा दिर दा रा दार दार आदि नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसमें आलाप, जोड़, झाला व मसीदखानी रजाखानी गतें बजाई जाती हैं। आज भारत में सबसे अच्छा सितार बजाने वालों में पं० रविशंकर व विलायत खाँ माने जाते हैं।

## सितार के बोल

दा — बाज के तार पर मिजराब से बाहर से भीतर की तरफ प्रहार किया जाये। इस तरह बजा कर जो आवाज निकले उसको दा कहते हैं। इसे आकर्ष प्रहार भी कहते हैं।

रा – इसी तरह भीतर से बाहर प्रहार किया जाये तो रा की आवाज जानी जाती है। इसे अपकर्ष प्रहार भी कहते हैं।

दिर – जब इन दो बोलों को एक मात्रा में बजाया जाये तो दिर शब्द के नाम से जाना जाता है। तथा इन्हीं बोलों के उलट फेर से द्रा, दाड़, द्रार्दा इत्यादि बोल बनते हैं।

झाला – चिकारी के तार पर तथा बाज के तार पर दा रा रा रा, बजाने को झाला कहते हैं। यह कई प्रकार से बजते हैं।

जोड़ आलाप – सितार में गत बजाने के पहले जो आलाप बजाया जाता है उसे जोड़ आलाप कहते हैं। यह बहुत विस्तार पूर्वक बजता है।

मसीतखानी गत – इसे मसीतखाँ ने प्रचार किया था, यह विलंबित लय में बजता है। इसके बोल हैं, दिर दा दिर दारा दा दारा, दिर दा दिर दा रा दा दा रा।

रजाखानी गत – इसे रजा खाँ ने प्रचार किया था। यह मध्यलय व द्रुतलय में बजाई जाती हैं। इसके बोल हैं, दा दिर दिर दिर | दा ऽ-र दा ऽ र दा | दा दिर दारा | दा दिर दारा |

गत – सितार के बोलों के साथ राग के स्वरों में तालबद्ध रचना को गत कहते हैं। मुख्य २ प्रकार के होते हैं (१) मसीतखानी गत (२) रजाखानी गत।

# तबला

कुछ लोगों का मत है कि इसके आविष्कारक हजरत अमीर खुसरो ही हैं। पखावज को बीच से काट कर दायां, बायां तबला बनाया गया। दाहिना या दायां लकड़ी का, बायां मिट्टी का या किसी धातु का होता है। दोनों का मुँह चमड़े से मढ़ा रहता है इसको पूड़ी कहते हैं। पूड़ी के किनारे गोट को चाँटी कहते हैं। दाहिने तबले के पूड़ी के बीच में काली स्याही व बायें के पूड़ी के बीच से हट कर स्याही लगी रहती है। दायें बायें की पूड़ी चमड़े की डोरी से कसी रहती है, इसे बद्धी कहते हैं। दाहिने में लकड़ी के गट्टे बद्धी के नीचे लगे रहते हैं। जिससे गट्टे ऊपर नीचे हथौड़ी से ठोक कर ऊपर नीचे के स्वर में मिला कर बजाया जाता है। मामूली कम ज्यादा करने के लिये पूड़ी के गजरे पर हथौड़ी से ठोक कर स्वर में मिला लेते हैं। इसमें



दाहिने व बायें से तबले के दस वर्ण बजाकर निकाले जाते हैं। वे धा धिन् ते रे तिन् ता क ग क्नि कत्त हैं। इसका शुद्ध रूप तबले में निकालने का ज्ञान तबला वादक के लिये बड़ा आवश्यक है। आज भारत में तबले के दो घराना मशहूर हैं। १—दिल्ली बाज, २—पूरब बाज। आज हमारे देश में अहमदजान थिरकुवा व कन्ठे महाराज बहुत अच्छे तबला बजाने वाले हैं।

१—दाहिने तबले पर निकलने वाले बोल—ता, ना, [illegible], ती, दिं, थूँ, ते, ति, तू, रे, टे,

२—बायें तबले पर निकलने वाले बोल—घे, गे, क, के, कि, क, त्त,

३—दोनों पर एक साथ निकलने वाले बोल—धा, धी,

# इसराज और दिलरुबा

यह एक प्रकार से सितार व सारङ्गी का ही रूपान्तर है। इसको दिलरुबा भी कहते हैं। इसकी शक्ल में थोड़ा सा अन्तर है, बजाने का ढङ्ग एक ही सा है। यह गज से बजाया जाता है। इसमें तरबें भी होती हैं। इसमें १६ परदे बँधे होते हैं। दाहिने हाथ से गज तारों पर चला कर बायें हांथ की दो अंगुलियों से बारी-बारी परदे पर रख कर बजाया जाता है। इसमें गतें व गाने वगैरह बजते हैं। यह बहुत मीठा बाजा है। इसके अंगों के नाम इस प्रकार हैं, तूँबा, लँगोट, डाड़, घुड़ज, अटी; खूटियाँ, चमड़ा व ४ तार मुख्य होते हैं।

---

# वायलिन (बेला)

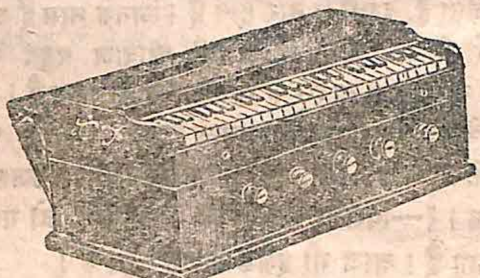
यह विदेशी बाजा समझा जाता है। पर अब तीन तरह से पूरा हिन्दुस्तानी वाद्य बना लिया गया है। (१) इसका नाम वायलिन से बेला रख दिया गया है, जो बहुत सुन्दर फूल का नाम है। (२) इसमें अपने राग अपने ढङ्ग से बजाए जाते हैं। (३) यह बैठ कर बेला के सिर को दाहिने पैर की एड़ी पर रख कर वादन करते हैं। कोई कहते हैं कि लंकापति रावण ने १ तार वाला बाजा जो इसके तरह गज से बजाया जाता था इजाद किया था, उसका नाम रावणस्त्रम् था, शायद उसी का रूपान्तर हो। यह वाद्य इटली का बना हुआ सबसे अच्छा माना जाता है। यह गज से बजता है, इसमें ४ तार होते हैं। जिनके नाम हैं जी डी ए ई। यह कई तरह से मिलाया जाता है। इसकी आवाज बहुत मधुर होती है। यह गायन के साथ व वादन के रूप में बजाया जाता है। इसके अङ्गों के नाम ये हैं, बेली, रिब्ज, घुड़च, साउन्ड होल्स, साउन्ड पोस्ट, टेलपीस, बदन, फिंगर बोर्ड, नेक, नट, सिरा, खूटियाँ, एडजस्टर, चिनरेस्ट, तार, बाल। १—विरोजा २—राजन ३—रैजिन, जो गज में घिसकर बजाया जाता है। आज भी इसके वादक बहुत हैं।

# वन्शी (बाँसुरी)

यह भारत का अति प्राचीन फूँक का वाद्य है। भगवान श्री कृष्ण ने अपने मुख से बजाया था। यह बांस की या पीतल की पाइप की फुट डेढ़ फुट की बनी होती है, इसमें कम से कम ६ सूराख होते हैं। यह फूँक से बजता है, मुँह से फूँक कर दोनों हाथों की अंगुलियों से बारी बारी छेदों को बन्द करने व खोलने से सब तरह के गाने बजते हैं। इसकी आवाज़ बहुत मधुर होती है। यह कई प्रकार के होते हैं।

# हारमोनियम

यह भी विदेशी बाजा है। मगर भारत में इसका खूब प्रचार है। इसमें कुछ गुण हैं जो इस प्रकार हैं, यह बहुत आसानी से सीखा जाता है। कम मूल्य व अधिक टिकाऊ होता है, तारों का कोई झंझट नहीं है। साधारण जनता भी इस पर सब तरह के गाने आसानी से निकाल लेती है। इसमें ७ शुद्ध स्वर, ४ कोमल व एक तीव्र स्वर होता है व ३ सप्तक के होते हैं और अपनी अपनी आवाज के साथ जहाँ चाहें वहाँ से गाने निकालने में बड़ी सुविधा है। मगर पक्के गाने वालों के लिये यह नहीं है क्योंकि इसमें सच्चे स्वर, मींड, गमक, श्रुतियों का प्रयोग नहीं



निकल सकता। इसीलिये आल इन्डिया रेडियो व पक्के गायक इसको स्तेमाल नहीं करते हैं। इसके अंगों के नाम ये हैं। केस, धौकनी, स्टार, रीडबोर्ड, परदा, पीतल की स्प्रिंग, सलोलाइट, वगैरह। यह बायें हाथ से धौंक कर दाहिने हाथ की सभी अंगुलियों से बजाया जाता है। यह एक जोरदार मधुर बाजा है। यह प्यानो के आधार पर बनाया गया है, तुमने प्यानो देखा ही होगा।

---

# राग विवरण

## वृन्दावनी सारङ्ग

दोऊ निषाद लागत जहाँ और जहां ध ग त्याग ।
सम्बादी वादी प-रे सो है सारंग राग ॥

थाट—काफी,इस में ग व ध नही लगता है। आरोह में शुद्ध नी व अवरोह में हमेशा कोमल नी लगता है।

जाति—औड़व औड़व है। वादी स्वर रे है सम्वादी स्वर प है। न्यास के स्वर सा, रे, प। आरोह—सा रे म प नी सां, अवरोह—सां नी प म रे सा। पकड़—नी सा रे, म रे, प म रे, नी सा। गाने का समय दिन का दूसरा प्रहर है।

विशेष— वृन्दावनी सारङ्ग को सारङ्ग भी कहते हैं। इसके कई भेद होते हैं। इसमें छोटे, बड़े ख्याल, तराना, ध्रुपद, धमार गीत के सभी प्रकार गाए जाते हैं।

## खमाज

तजिय रिषभ आरोह में दोऊ निषाद लगाय।
अरु वादी सम्वादी ग-नी राग खमाज कहाय ॥

थाट—खमाज, स्वर व जाति—इसके आरोह में रे नहीं लगता। आरोह में शुद्ध नी व अवरोह में कोमल नी का प्रयाग होता है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ६ स्वर लगते हैं व अवरोह में सातों स्वर लगने के कारण इसकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण है।

वादी स्वर ग है व सम्वादी स्वर शुद्ध नी है । न्यास (ठहरने) के स्वर सा, ग, प, ध, नी, हैं। आरोह—सा ग मं प ध नी सां, अवरोह — सां नी ध प म ग रे सा। पकड़—नी ध, म प ध, म ग। इसका गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है।

विशेष—इस राग की प्रकृति चंचल तथा क्षुद्र है। इसमें छोटे ख्याल ठुमरी अधिक गाई जाती है। यह शृंगार प्रधान राग है।

# अल्हैया बिलावल

मध्यम तजि आरोह में ध ग सम्वादी चाहि ।
कहु निषाद कोमल लगे कहिय अल्हैया ताहि ॥

थाट—बिलावल, स्वर व जाति—इसके आरोह में म नहीं लगाने की प्रथा है। अवरोह में दोनों नी का प्रयोग होता है। कोमल नी, ध के साथ लगाया जाता है। आरोह में ६ स्वर, अवरोह में सातों स्वर लगने के कारण इसकी जाति षाड़व सम्पूर्ण है। वादी स्वर ध है। सम्वादी स्वर ग है। आरोह—सा ग रे ग प ध नी सां, अवरोह—सां नी ध प, ध नी ध प, म ग म रे सा। पकड़—सा ग रे ग प, ध नी ध प म ग म रे सा। गायन समय दिन का पहला प्रहर है। रुकने के स्वर—सा, रे, प।

विशेष—इसमें ग स्वर वक्र रूप में लिया जाता है। इसमें छोटे बड़े ख्याल गाए जाते हैं।

नोटः—बिलावल के आरोह-अवरोह सम्पूर्ण हैं व सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर ध व सम्बादी ग है। आरोह—सा रे ग म प ध नी सां, अवरोह—सां नी ध प म ग रे सा। पकड़—ग रे, म प ध नी सां है, बाकी सब ऊपर की तरह है।

# काफी

कोमल ग नी लगाय कर गावत आधी रात ।
प सा बादी सम्वादि ते काफी राग सुहात ॥

थाट—इस राग की उत्पत्ति काफी थाट से होती है। स्वर व जाति—इस राग में ग॒, नी॒ कोमल लगते हैं। आरोह में सातों स्वर व अवरोह में सातों स्वर लगने से इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है।

वादी स्वर प व सम्वादी स्वर सा है। ठहरने के स्वर—सा, रे, ग॒, प है। आरोह—सा रे ग॒ म प ध नी॒ सां है, अवरोह—सां नी॒ ध प म ग॒ रे सा है। मुख्य स्वर समुदाय—ग म प, रे ग॒ म प। समय—रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। होली के दिनों में किसी भी समय गा सकते हैं।

विशेष—यह चंचल प्रकृति का राग है। इसमें शुद्ध ग, नी तथा तीव्र मं का विवादी स्वर की तरह सुन्दर लगने के नाते भी प्रयोग करते हैं। इसमें छोटे ख्याल, होरी, टप्पा, ठुमरी बहुत अच्छा लगता है।

# यमन

शुद्ध सुरन के संग जब मध्यम तीवर होय ।
ग नी वादी संवादिते यमन कहत सब कोय ॥

थाट—कल्याण, स्वर व जाति—इसमे मं तीव्र, अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में सातों स्वर लगने के कारण इसकी जाति सम्पूर्ण सम्पूर्ण है। वादी स्वर ग है व सम्बादी स्वर नी है। ठहरने के स्वर—सा रे, ग, प, नी है। आरोह—सा रे ग मं प ध नी सां, अवरोह—सां नी ध प मं ग रे सा,।

पकड़—प मे ग, नी रे ग रे नी रे सा । विशेष—इसमें कभी कभी शुद्ध मध्यम का प्रयोग करके यमन कल्याण भी कहते हैं । और दोनों म का प्रयोग कर जैमिनी कल्याण भी कहते हैं । यह गम्भीर प्रकृति का राग है । इस राग में बड़े, छोटे ख्याल, ध्रुपद, टप्पा आदि सब तरह के गाने गाये जाते हैं ।

## भैरव

ध रे वादी संवादि करि रे ध कोमल मान ।
प्रात समय नीका लगे भैरव राग महान ॥

थाट—भैरव, स्वर व जाति— इसमे रे, ध कोमल अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं । आरोह में सातों स्वर, अवरोह में भी सातों स्वर लगने के कारण इसकी जाति सम्पूर्ण है । इसका वादी स्वर ध है तथा सम्वादी स्वर रे है । ठहरने के स्वर सा, रे, प, ध हैं । आरोह—सा रे ग म प ध नी सां । अवरोह—सां नी ध प म ग रे सा है । पकड़—ग म ध ध प, ग म रे रे सा । समय प्रातःकाल का ४ से ७ तक है ।

विशेष—इसकी प्रकृति गम्भीर है । इसमे रे व ध पर आंदोलन विशेष होता है । इसमें बड़े, छोटे, ख्याल, ध्रुपद वगैरह गाये जाते हैं।

## भैरवी

कोमल स्वर सब ही लगे, मध्यम वादी बखान ।
षडज जहाँ सम्वादि है, तहाँ भैरवी जान ॥

थाट—भैरवी, स्वर व जाति— इस राग में रे ग ध नी कोमल अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं । इसके आरोह में सातो स्वर लगने के कारण इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है । वादी स्वर म है, सम्वादी स्वर सा है । ठहरने की जगह सा, ग, म, प है । आरोह—सा रे ग म प ध नी सां है ।

अवरोह—सां नी ध प म ग रे सा है। पकड़—म ग रे ग रे सा, ध़ नी़ सा रे सा। समय—प्रातः काल का प्रथम प्रहर है।

विशेष—इसमें बारहो स्वर लगा कर लोग गाते हैं। मगर शास्त्र के अनुसार ४ स्वर कोमल का ही गाना चाहिये। यह बहुत मीठा राग है। संगीत समारोहों में अन्त में लोग भैरवी गा बजा कर खतम करते हैं। इसमें छोटे, बड़े ख्याल, होरी, तराना, टप्पा व ठुमरी बहुत गाई जाती है। यह लोकप्रिय राग है।

## भूपाली

म नी वर्जित कर गाइये, जानिए थाट कल्यान।
ग ध वादी संवादि सो, भूपाली पहचान॥

थाट—कल्याण, स्वर व जाति—इसमें म, नी वर्ज्य हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में पांच स्वर, अवरोह में भी पाँच स्वर लगने से इसकी जाति औडव-औडव है। वादी स्वर ग, सम्वादी स्वर ध है। रुकने के स्वर सा, ग, प, ध। आरोह—सा रे ग प ध सां। अवरोह—सां ध प ग रे सा। पकड़—सा ध़, सा रे ग। समय रात का पहला प्रहर है।

विशेष—इसमें छोटे, बड़े ख्याल गाये जाते हैं। यह गम्भीर प्रकृति का राग है।

## आसावरी

ग ध नी कोमल सुर लगे, चढ़त गनी न सुहात।
ध ग वादी संवादि ते, आसावरी कहात॥

थाट—आसावरी, स्वर और जाति—इसमें ग, ध नी कोमल, बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं, आरोह में पांच स्वर व अवरोह में सातो स्वर लगने से

औडव-सम्पूर्ण जाति का है। वादी स्वर ध, सम्वादी ग है। ठहरने के स्वर सा, ग, प, ध, हैं। आरोह—सा रे म प ध सां, अवरोह—सां नी ध प, म ग रे सा। पकड़—म प ध, म प, म ग रे सा। समय—दिन का दूसरा प्रहर है।

विशेष—बहुत लोकप्रिय राग है। ग ध पर आन्दोलन होता है। इसमें छोटे, बड़े ख्याल गाये जाते हैं।

## दुर्गा

म सा वादी संवादि कर, ग नि वर्जित कीन्ह।
थाट बिलावल जानति ही, दुर्गा को तव चीन्ह॥

थाट—बिलावल, स्वर और जाति—इसमें ग, नी नहीं लगता है। आरोह में ५ स्वर व अवरोह में ५ स्वरों के लगने से इसकी जाति औडव-औडव है। वादी म, सम्वादी स्वर सा है। ठहरने के स्वर सा, रे, म, प, ध हैं। आरोह—सा रे म प ध सां, अवरोह—सां ध प म रे सा। पकड़—रे म प ध, म प ध, म रे ध़ सा। गायन समय—रात्रि का दूसरा प्रहर है।

विशेष—यह एक रंजक राग है। इसमें छोटे, बड़े ख्याल गाये बजाये जाते हैं।

## देश

वादी रे, सम्वादि प, दोउ निषाद लग जाय।
देस राग सम्पूर्ण करि, मध्य रात्रि में गाय॥

थाट—खमाज, स्वर व जाति—इसके आरोह में शुद्ध नी, अवरोह में कोमल नी लगता है। इसके आरोह में पाँच स्वर, अवरोह में सातो स्वर लगता है, इसलिये इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। वादी स्वर रे,

सम्वादी स्वर प है। ठहरने के स्वर सा, रे, प,। आरोह—सा रे म प नी सां। अवरोह—सां नी ध प म ग रे, ग नी सा। पकड़—रे म प नी ध प म ग रे, ग नी सा। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है।

विशेष—यह चंचल प्रकृति का एक रंजक राग है। इसमें छोटे-बड़े ख्याल व ठुमरी बहुत अच्छी लगती है।

## भीमपलासी

जब काफी के मेल में, चढ़ते रे ध त्याग।
ग नी कोमल सम्वाद म स, भीमपलासी राग॥

थाट—काफी, स्वर तथा जाति—इसमें ग, नी कोमल, अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रे, ध वर्ज्य व अवरोह में सातों स्वर लगने के कारण यह औडव-सम्पूर्ण जाति का है। वादी स्वर म व संवादी स्वर सा है। ठहरने के स्वर सा, म हैं। आरोह—नी सा ग म प नी सां, अवरोह—सां नी ध प, म प ग म, ग रे सा। पकड़—नी सा ग म, प ग म, ग रे सा। समय दिन का तीसरा प्रहर है।

विशेष—यह राग गम्भीर प्रकृति का है। इसमें छोटे, बड़े ख्याल बड़े अच्छे ढंग से गाया जाता है।

———

# पुस्तक मिलने का पता

(१) प्रयाग सङ्गीत समिति; अलफ्रेड पार्क, इलाहाबाद

(२) कला प्रकाशन, २४० मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–३

(३) श्री मोहन लाल चौरासिया, २८३ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

(४) श्री रविशंकर चौरासिया, ४७७ कटरा नील, देहली–६

(५) रती राम एंड कंपनी, म्यूजिक स्टोर, नई सड़क, देहली–६

(६) रिखीराम एण्ड कं०, मरीना आरकेड, कनाट प्लेस, नई दिल्ली

(७) बीना म्युजिक हाउस, नई सड़क, देहली–६

(८) श्रीमती सरस्वती देवी, सन्चालिका, रविशंकर म्युजिक सोसाइटी, कटरा नील, घन्टेश्वर गली में, महावीर लेन

म० नं० ६५५, देहली–६

---

# इस पुस्तक में क्या है

## बच्चों के गीत

जिसकी प्रशंसा रजिस्ट्रार, प्रयाग सङ्गीत समिति, प्रिन्सपल, गान्धर्व महाविद्यालय देहली, प्रो० महेश नारायण सक्सेना, संगीत रीडर श्री लाल मणि मिश्र, बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, श्री० चन्द्र शेखर पन्थ, देहली विश्वविद्यालय तथा प्रिन्सपल, राजकीय उच्च माध्यमिक मॉडल स्कूल, लुडलो कैशल ने की है। यह अभी तक अपने ढङ्ग की अनूठी सर्वोत्तम पुस्तक है।

इसमें नर्सरी कक्षा से ८ वीं तक के लिए चुने हुये बीस गीतों को भातखंडे स्वरलिपि में दिया गया है। जिसमें सहगान, मारचिङ्ग सांग, राष्ट्रीय गाने, लोक गीत, परम्परागत प्रार्थनायें, स्काउट गीत व राष्ट्र गान की राजकीय मान्यता प्राप्त स्वरलिपि दी गई है। गायन वादन का पूर्ण शास्त्र ६, ७, ८ वीं कक्षाओं के लिए तथा प्रथम वर्ष, प्रयाग सङ्गीत समिति, गान्धर्व महाविद्यालय, भातखंडे सङ्गीत महाविद्यालय व प्रवेशिका, प्रयाग महिला विद्यापीठ के स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार दिया गया है।

---